Health Record

	SELF	WIFE	FATHER	MOTHER	CHILD	CHILD
Name						
Age						
Height						
Weight						
Right Eye Sight Left						
Blood Group						
Blood Pressure						
RBC Blood Count WBC						
Diseases						
Injuries						
Surgery						
Allergies						
Memo						

Doctor		Off.	
		Resi.	
Dentist		Off.	
		Resi.	
Child Specialist		Off.	
		Resi.	
Laboratary		Off.	
		Recp.	

17·2·93 Evening

ॐ

श्रद्धा ज्ञान निकालती है। अज्ञानी मनुष्य के पास भी जाओ
तो श्रद्धा से recieve भी करता है present भी देता है।
जो वस्तु चाहिए जो gift चाहिए वो तुम्हे दे देता है।
दुनियां मे श्रद्धा भावना बहुत काम करती है। तुम्हारी भावना
भी नहीं है आगे वाले के लिए, प्रेरणा भी नहीं है फिर भी
तुम कर्म करते है पर कर्म होना चाहिए सच्चाई का। ढ़ोंग से
कर्म करेगा तो कर्म तुम्हारा तुम्हारे से लडेगा। ढोंगी नहीं
बनना कि हमने कर्म करना है। हमको भावना नही है, भावना
का मालूम भी नहीं है फिर भी सारी दुनियां कर्म करती है
फिर परिणाम क्या निकलेगा। कर्म के सिवाय मनुष्य रह
भी नहीं सकता है तभी कर्म करते है। ये देह कर्म के
सिवाय नहीं रह सकती है पर हमारी भावना कौनसी है।
भावना होगी ऊंची तो मेरा कर्म जागेगा। किसी को भी
ठग के कर्म करे, show के लिए कर्म करे, नौकर बनाने

के लिए कर्म करे, नीचे करने के लिए कर्म करे तो साक्षी तो है उसको बताएगा। तुम इस बात को ध्यान नहीं देते है। हम को तो प्रेरणा आती है हम रोक ही नहीं सकते है। हमारे कर्म में प्रेरणा भी है भावना भी है दर्द भी है बाकी के कर्म हम ने छोड़ दिए हैं total मैंने सब कर्म छोड़ दिए है आलसी है (नि० के है) बाकी कोई श्रद्धा वाला आता है तो मेरा भी नियम तोड़ देता है। प्रेम में कोई law नहीं होता। तुम सब कर्म जरूर करते है चाहे सत्संग होवे चाहे और कोई कर्म होवे क्योंकि तुम चुप नहीं बैठ सकते है। हम को सारा दिन भी चुप में बैठना पड़े तो हम को कोई फर्क नहीं है। हमको नहीं लगता है मैं निकम्मा हुं, सारा दिन शान्त में हुं। अमेरिका से कोई ऐसा संकल्प भेजेगा वहां मैं एक letter

भी लिख देगा तुम तो कर्म करके फिर पछताते है right wrong सोचा इसका मतलब तू doer है। चिन्तन क्यों चला तो तुम्हारे अन्दर सच्चाई की भावना नहीं थी न। प्रेरणा नहीं थी। तुमने ऐसे ही कर्म कर लिया। ज्ञानी और अज्ञानी में फर्क है ज्ञानी भी कर्म करता है और अज्ञानी भी कर्म करता है। ज्ञानी के अन्दर सच्चाई और meaning है तुम doer पने में कर्म करते है आगे वाले को शान्ति नहीं मिलेगी। तभी तुम्हारा कर्म खिलता नहीं है बस हो गया तो हो गया पर तुम को यह ~~मैं~~ भावना नहीं उठती है कि आगे वाला कैसे ऊंचा उठे यह मेरे समान हो जाए। मेरा सं० और उसका सं एक हो जाए तभी हम दो नहीं रहेंगे। दोनों का सं एक है। तुम को कोई सामने एक भी नहीं है जो सच बोले। तुम को कोई सच्चाई बोले भी तो तुम सुन भी नहीं सकते है।

हम को कोई विकार बताये हम बड़े धीरज से सुने।
तुम अपना विकार सुन कर भी तृप्त रहो तो आगे
वाला भी ऐसा विकार बताएगा। पर तुम उस बात में
नहीं है उस देश में नहीं है जहां तुम को सब सच
बताएं तुम्हारी बात जाकर गुरु को बताएगा पर तेरे
को सामने नहीं सुना सकेंगे। उस देश में रहना चाहिए
जहां सब को तृप्ति मिले कि यह मेरी दिल से बात
सुनेगा। तुम्हारे से कोई सच बोलता है क्या, हमारे से
लोग फिर भी सच बोलेंगे। सब को तुमने पर्दे में
रखा है हमारे लिये सच को मालूम पड़े कि यह
बिच्छू नहीं है जो काटेगा। तुम अपना शब्द याद
रखो तो तुम ने किसको तीखा मीठा बोला है
सब तो राम रुप है तो किससे तीखा बोले।
हम कर्ता है तो चिन्तन चलेगा नहीं तो कर्म

होगा और भूल जाएगा जैसे हुआ ही नहीं है।
ओम

19.2.93 Morning
ॐ
दुनियां account पैसे का करती है अपना कोई account
नहीं करता है। पैसा गिनती करते है पैसे में मन है पर
अपनी life में मन नहीं है। हम पहले क्या थे क्या ले
कर आये है। पैसा बना ही इस लिए है कि तुम और
सब चीज भूल जाओ भ० भी भूल जाओ और सब भी
भूल जा, खाली पैसा गिनती कर कि लाख है दो लाख है।
इसमें तुम्हारी वृत्ति जानवर की तरह हो जाती है। पैसा
इधर ही बना है भ० ने पैसा साथ में नहीं दिया। हम
सब देवता है कोई चीज तुमको जास्ती मिली कोई किसी
को तो देवता २ की सहायता करे। इसमें money की
क्या बात है इधर तो show decoration है इससे
तुम्हारी वृत्ति नीचे होती है चाहे तन का चाहे मन का

तुम देखो तुम्हारा कितना मन decoration में है। अभी
जो decoration है Sindh में तो decoration देखा ही नहीं।
अभी जो decoration है वह पहले कभी नहीं था अभी
तो जौहरी की दुकान इतना चमकते है जो चोर न चाहते
हुए भी show में आ जाते है। तुम्हारे पास show
business है इससे अन्दर की रोशनी नहीं निकलती है।
मेरी आ० की रोशनी चमके, face चमके कि हम तृप्त है।
कोई भी इच्छा नहीं रही जो बाकी मैं बोलू कि मैं अतृप्त
हूं। महलात में रहुं तो भी झोपड़ी है यदि झोपड़ी में
है महलात वैं हूं ही है। यह नहीं है कि सब सुख
चाहिए। सुख क्या है जैसा शरीर है उसकी जरुरत
के अनुसार नि० देगा। पर न मिलने पर हम तृप्त है।
कोई हर्ष शोक नहीं है। काहे का शोक, काहे की
जरुरत। एक आना है तो एक आने की चीज खायें।

कोई सो में भी चलता है कोई 5 हजार में भी नहीं चलता।
यही दुनियां है जिसमे हम रह रहे है तो हम ने कभी अपनी
account देखा है या ऐसे ही दे०अ की वृत्ति है, आत्माकार
वृत्ति नहीं होगी। हर मनुष्य अपनी २ थाली लेकर घूमता
है। प्रारब्ध तेरी रोटी तुमको ढूंढे। अभी करोड़पति है पर
अन्दर राख अंगारा है। करोड़पति सब कर्जा लेकर चलते
है। जितना लेंगे उतना ही हिसाब किताब होगा पै
केवल आंखो की तृप्ति है। मेरा वास खाना पीना है
गर्भ में क्या चिन्ता किया तो बाहर हम क्यों चिन्ता करें।
सब को चिन्ता है क्योंकि much wants more, want
is weakness, इच्छा बढ़ती है तो कमजोरी जरुर आयेगी।
रस उसको देख कर इच्छा बढ़ती है। माया कभी strong
नहीं करेगी। माया हमारी तन्दुरुस्ती को कीड़ा लगाएगी
डॉ लोग cancer की enquiry करते है पर उनको

पूरी समझ भी नहीं आती है कमती खाएंगा ज्यास्ती खाएंगे white कीड़ा बढ़ेगा या कम होगा। white blood cells अन्दर खून है किसका लाल ज्यास्ती बनता है किसका white जो चीज़ लोभ में खाएंगे तो कीड़ा बढ़ेगा। वैसे बीमारी cancer की कुछ नहीं है चाहे Aids है। एक तो ज्यास्ती ऐश है पराए मर्द को देखने से भी दिमाग से ताकत निकल जाती है। तुम बोलेगे मैं तो निर्विकारी हूं ये नहीं है। सिवाय ब्रह्म के निश्चय के तू निर्विकारी नहीं हो सकता है। ये मनोविज्ञान है। हम को human psychology है तो अनुभव है। Total शरीर ही विकारी है। जो जैन धर्म वाले है वह तितिक्षा करते है पर वासना तो नहीं गई हम दमन नहीं करते है ज्ञान से देखते है कि इससे क्या दमन करना है weakness है

पर सहज में ही मन रहे ही नहीं, जितना हम तुमको ज्ञान सुनाते है तुम argue करते है न तो कितनी बड़ी माया है उतना बड़ा ज्ञान है। तुम भी किसको अनुभव से ज्ञान सुनाओ कि यह माया क्या होती है तो आगे वाला भी बनेगा।

प्रेमी - यह अच्छा लगा।

भ. :- अपना A/c रखेंगे तो और किसके साथ बैठने की ज़रूरत नहीं होगी। अपने A/c में मन है तो राग द्वेष नहीं होगा। अपने से डूबा रहेगा। जितना २ जीव भाव है उतना २ ब्रह्म भाव में आता है। कितना २ भुलेला आया था। उसको पैसा पीड़ा देता है तभी तुम छोड़ते है। मेरे को फिर यह पीड़ा होती है कि पैसा मनुष्य का खून ही खलास कर देता है। जो

19.2.93

ॐ

प्रेमी - भ० कभी तो आकाश से आकाश हो जाते हैं पर हमेशा नहीं होते हैं।

भ० - न तुम पुरुषार्थी हैं न तुम प्रारब्ध पर विश्वास रखते हैं जैसे store में कोई चीज़ रखते हैं ऐसे सम्बन्धी हैं या और चीज़ हैं सब को store room में रख दिओ कि मेरे काम को नहीं है। सत्संगी पाण्डव बुद्धि के बाकी सारी दुनियां है कौरव बुद्धि के। मेरा उनसे बिल्कुल व्यवहार बन्द है। हां निमित्तमात्र हम उनके घर का पानी गिलास भी नहीं पीयेंगे कोई इधर में आएगा तो निमित्तमात्र उनको पानी का गिलास पिलाएंगे। हम उनके घर का पानी गिलास भी नहीं पियेंगे बाकी जो घर में भी बैठे हैं वो भी हमको समझे ~~कि~~ ये CID बैठा है, भ० का नारद बैठा है, पे भी उनको बोलना नहीं है। बाकी हमारा

एक शब्द भी किसको न मिले one word भी नहीं। हमारे साथ कोई बीस बरस भी रहे तो भी हमारा एक शब्द भी किसी को नहीं मिल सकता है। कसम है मेरा। तुम ऐसा कसम उठा सकता है। शब्द जो है वो तलवार है मारे या जिताए। मेरे को जुबान पर control है। मेरा किसके पास शब्द नहीं है तुमने तो जो शब्द भी जिसको दिया होगा उसको आज तक याद है। हमारे लिए इतना सब समझते हैं कि ऐसे हम इनको जीत नहीं सकते हैं। हमारा दादा भी सब को बोलता था तुम को जो बात करनी है इनको कर के आओ और जीत कर आओ पर वो नहीं कर सकते थे क्योंकि एक ब्रह्म है जिसमें कोई सं० वि० ही नहीं। सं० वि० अज्ञानी के भी चलता है ज्ञानी को भी चलता है क्योंकि ज्ञानी भी ब्रह्म को नहीं जानते हैं जिसने ब्रह्म को पहचाना जिसने सगली ब्रह्म

पहचाना उसके लिए सं. वि० नहीं है। ज्ञानी माता
I know, हमको उस पद में आना है जहां मेरी
I know खत्म हो जाए, पता भी न पड़े तू क्या है
मैं क्या, सियाना क्या, बेवकूफ क्या, पता ही न पड़े।
बेखबरी में मजा है। तुम आते है तो मैं भर्म
भी होते है नहीं तो मेरे को शौक मोह नहीं है।
खबर में है तो दुख है बेखबरी में है तो आनन्द है
और किसमें भी मन नहीं रखना है। मन डालने की
आदत नहीं रखो। मन को देखो जाएं तो कहां जाएं।
जब सब अपने २ स्वभाव में है तो मन रखने का
क्या मतलब है। कोई सियाना है कोई बेवकूफ है हम
क्या करें। तुम बोलेंगे मेरा बेटा नशाई है भाई
उसमें मन रखेगी कि यह सुधरे पर जभी वो
धक्का खाएगा तो drug वाले Dr के पास

जाएगा कि मेरे को छुड़ाओ तभी सुधरेगा। Dr सभी
बोलते है कि अपनी will के सिवाय कुछ नहीं छूटेगा। जभी
कोई खुद चाहना करेगा तभी उसका स्वभाव संस्कार छूटेगा।
जब अन्दर में will रखेगा, एक दम बदलूँ, तभी संस्कार छूटेगा।
तभी बोलते है गुरु बेचारा क्या करे जो चाकर माहि चूक।
तुम सीधा रास्ता नहीं पकड़ेंगे उल्टे रास्ते में जाएंगे तो
क्या होगा। तभी कहते है नानक ताके लागो पाहि - उसका
आदर्श क्या है उसकी will क्या है उसने क्या किया है
वो मैं करूं वो निराहारी है तो हम भी निराहारी होएं,
वो निरिच्छा है मैं भी निरिच्छा रहूं। उसका आदर्श जरूर
रखना है। लड़ाई में लड़ाई वाले की शकल (शिव जी)
आगे रखते है तो जोश आयेगा उसका व्यवहार याद करो,
कहां गया, उसके सगे सम्बन्धी कहां गए, उनका सब
कुछ कैसे सपना हो गया। जीते तो सब है पर मेरे को

उनका सपना भी नहीं है वो हमको याद भी करते हैं जैसे तुम भी सब याद करती है। ऐसे भूलेंगे कैसे पर वो जाकर याद करे मरे पर हम ने तो इतना पक्का किया है कि मेरे को एक भगत भी नहीं है जगत भी नहीं है। दो है क्या? एक ही है तो भगत भ० भी क्यों? द्वैत का छुआ भी नहीं। भगत शरीर है। आ० भगवान है। गु० ना बोलता है इक भगत इक भ० जिस प्राणी के नाही मन -- । दो है ही नहीं तो कौन किसको नामरूप में जास्ती, कौन किसको कम ज्यास्ती देखे।

प्रेमी - इसका मतलब सारा time मौन में रहना है।

भ० - एक मौन करे दूसरा अग्रसर वो बने तू defence में बात कर। अग्रसर बनके बात करेंगे तो द्वैत ही होगा defence में अद्वैत बोल सकते है।

ओम

19.2.93 10 am

ॐ

प्रेमी - मौन नहीं आती।

भ० - अन्दर से setting करो एक भी सं० नहीं, अन्दर में विक्षेपता न हो तो प्रकृति set है। तुमने ~~अन्दर~~ अपनी प्रकृति set नहीं किया फिर set करके fit करके बैठो। यदि प्रकृति को fit नहीं किया तो तू पु० प० कैसे है? राजा अपनी प्रकृति को set करके बैठा है न? अभी तो तुम सब मूर्ख बैठे है। तुम तो किसी न किसी की शिकायत करते हो पति ऐसा है बेटा ऐसा है क्योंकि तुम्हारे अन्दर नम्रता, धीरज, शान्ति नहीं है। मनुष्य के अन्दर क्या computer है जो प्रकृति को set भी कर सकता है पर शान्त नहीं है दिमाग नहीं है, धीरज नहीं है। यदि set नहीं करेगा तो जन्म मरण तैय्यार है। अभी एक २ के ऊपर तुम बोझ है। जब प्रकृति बना लेगा तो एक भी सं० नहीं उठेगा। आज मेरी ये नई बात समझो कि

मेरी प्रकृति कैसी है? मैं कितना शान्त still हूं। ये प्रकृति आपे ही automatic चले। किसका मर्द मरता है तो औरत कहती है मैं कैसे चलूंगी तो अन्दर प्रकृति बना लेती है। किसी की औरत मरती है तो मर्द उसी time अन्दर ही thought बना लेता है कि मैं साली से शादी करूंगा। सब का मन चलता है अन्दर प्रकृति बना लेते हैं फिर मेरी बात कैसे catch करेंगे? मैं किसी को order नहीं करेगा। सं० से कश्मीर जाने का है बाहर से मेरे से पूछते हैं। सं० को ध्यान दो तो प्रकृति सब बताएगी।

प्रेमी - द्वैत नहीं जाता।

भ० - कौन सी बीमारी है जो द्वैत करते हैं? क्यों न प्रेम का रंग चढ़े? प्रेम का fountain बन्द करते हैं और [illegible] आने की पिचकारी लेते हैं।

ओम

20. 2. 93 Sat Morn

ॐ

तुम्हारे दिल में अगर दर्द होवे तो कौन सी बात के लिए, कौन सी चीज़ के लिये पीड़ा होवे।

प्रेमी - भ० यह दर्द होता है कि देह का बन्धन पूरा छूट जाए।

भ० - कौन छूटे? मैं बन्धन से छूटू मेरे को रस्सी किसने बांधी। अभी तुम्हारा शरीर ठीक नहीं है तो तुम इधर आ सकेंगे? ज्यादा से ज्यादा शरीर ही बन्धन रूप है। यही माया है। बाहर भी जो बन्धन है वो भी हम ने ठगी किया, चोरी किया, वासना रखी। किसको याद है कि वासना रखेंगे तो बन्धन में आएंगे अपना ही मन बन्धन में है, खुद ही वासना से हम ने सब को बांधा है। अभी इतनी शादी होती है सब खुद ही तो बन्धन को जाते हैं। तुम बेशर्म है जो बोलते हैं वह रोकता है। तुमको कोई छोड़ भी दे तो भी तू अकेला हो जाएंगे। तुम किस बात में भी अपने से fit नहीं है तुम्हारा ही मन फंसा पड़ा

है किसी ने भी सुख्याती नहीं रखी कि वासना रखेंगे
तो जन्म मरण में आएंगे। यह सं करे कि मेरा मन
किसी में नहीं है तो और भी कोई मेरे में मन नहीं
रखेगा। जिसने जितनी अन्दर की तैयारी किया है उसकी
माया कट है। ज्ञान सुन के माया न कटे तो तू मनुष्य
नहीं है गधा है। बाहर प्रकृति सुन्दर लगती है पर
सच नहीं है। सच है ज्ञान का गहना। अपने को कसूर
दिओ हर बात में पर पति को सपने में भी कसूर
नहीं देना। वो बोलता है तू पत्नि है तो तुम ने भी
तो माना है। क्या तुमको सपने में नहीं आता है
कि ये मेरा पति है, ये मेरा भाई है, ये मेरा बाप है।
मेरा कोई होगा दुनिया में तो मेरे को लहर आएगी।
मेरा बोला तो किसने? तुम बस बात में जाते ही नहीं है।
जो भी मेरी चीज है मेरे को कभी भी सपने

में याद आयेगी। हम उधर जाते ही नहीं जहां मैं मेरा है।
आया अकेला - - - -
मैं चाहे 4 जने का खाना बनाऊं तभी भी अकेला हूं।
एक अकेला हूं तो अन्दर वाले से पूरा निर्णय करो नहीं तो
कभी न कभी किसी की वासना तुम को दुखी करेगी। जगत
मन की कल्पना है सच नहीं है। सच होता तो देखो कौन
से जगत की हम बात करते है। तुमने कभी सुना है मेरा
कोई जगत है? तुम को तो सामने आदर्श है तो भी तुम
गधे में गधे है। वह सच्चाई नहीं है cleanness नहीं है
कुछ भी तुम्हारे को possession नहीं है तो भी अन्दर
का बीज खलास नहीं किया है मैं कहां हूं मेरा कहां है?
हमारे पास संसार की बाते थोड़ी नहीं आती है पर
ऐसे सुनते है जैसे पड़ोसी की। पड़ोस का दुख फिर
भी अन्दर आएगा तो निवृत्त करेंगे उसका पर बाकी

आई बात गई बात। कोई सुनाता भी है तो बहेर कान है, तुम फोटो निकालो न। जभी हम जीव सृष्टि से निकलना चाहे तो निकल सकते है, ईश्वर सृष्टि में आ सकते है। तुम भजन बोलते है जीव है जगत है। जीव भी फुरना, ब्रह्म भी फुरना, ब्रह्म भी फुरना फिर इस अर्थ में रहते है?

प्रेमी - non फुरना बाकी क्या है?

भ० - वहां केवल सत्य रह जाएगा essence जभी essence बनता है तो फूल पूरा खत्म होता है। फूल गायब होता है तो essence रह जाता है। फूल की हस्ती है तो essence कहां मिलेगा। यह अभ्यास की कमी है, नहीं तो यह सब ज्ञान सुनते भी है पर मनोरंजन में रहते है। इन को यह चिन्ता नहीं है कि मेरा लक्ष्य क्या है?

मैं ज्ञान सुनाते है सुनते है मेरे को ही कुछ न कुछ याद है तो प्रकृति वाला को याद हुआ तो क्या हुआ? इसमें अपना मौत है। जीव सृष्टि का पूरा बीज ही गल जाए।

ओम

21.2.93 4.P.M

ॐ

ज्ञान तो शास्त्र में लिखा है पर विज्ञान किस को कहते है उस पर विचार करो। ज्ञान को भी रखो एक तरफ बाकी विज्ञान सीखो कि विज्ञान किसको कहते है। प्रेमी - गुरु का आदर्श ही विज्ञान है।

भ० - गुरु के जैसे कौन चलता है जो कहे कि मैं गुरु के निमित्त चलता हु। कौन गुरु पर जाता है यह फलाणा है तो फलाणा बन कर ही चलता है गुरु का टोप सिर पर रख कर चलता है किसने मेरा शीश अपने ऊपर रखा है। मेरी बात सुनते ही नहीं है।

इतनी सरल बात भी समझ में नहीं आती है कि कौन
वो शीश रखना है । मैंने जिस नये घर में जन्म
लिया है वैसी रहनी से कौन चलता है । गुरु का शीश
रख कर विज्ञान कौन अनुभव में लाता है । मेरा शब्द
भी देह से लगाते है कि मैं फलाणी बाई ऐसा
करती हूं कौन विज्ञान बनाता है कि एक दिन भी मेरा
शीश लेकर चला होवे । गु०न की फिर भी बात करेंगे
कृष्ण की करेंगे पर मेरी बात कौन करता है ।
जो मेरे को यह पहचानते है वो जानते है कि कैसे
यह जगत से न्यारा है । सब को पक्का है कैसे श०
निरइच्छा है कैसे माया रहित है । तुम सब अपने को
देखो तुम मेरी बात करते है पर मेरा शीश नहीं रखते है ।
आज manager है सेठ का कारोबार चलाएगा तुम भी
बात करेंगे पर गुरु कि सिक्क (फल्क) रख के

बात नहीं करेंगे । अभी दादा श० visible नहीं है तो सब
बोलते है न कि दोनों की तृप्ति आप से आती है । one
में two देखते है । तुम अपने नामरूप में अटक गए है
तो यह बात तुम को ध्यान में भी नहीं है । तुम को सब
उस रूप में ही देखते है कि फलाणी बाई है ।
प्रेमी - कौन सी कमी है हमारे में ।
श० - इतना गुरु का ध्यान, विचार, मनन, चिन्तन नहीं
है । तुम्हारे को ध्यान नहीं है
उनकी बात में चिन्तन मनन करे । तुम्हारा बाहर ख्याल
है मैं शान्त हूं मैं मौन हूं । मेरे को कुछ चाहिए नहीं
यह सुनाते है पर श० की वह लहर तुम्हारे में नहीं है ।
ज्ञान की केवल लहरे बनाते है । जैसा मैं हूं जैसे
को तैसा कोई नहीं होता है । मेरा सीस किसने रखा
है । अज्ञानी भी मेरे लिए बोल सकता है कि यह

कैसे मायारहित है। जिसको माया का लोभ है वह
हेराफेरी करेगा नहीं तो वह टके में भी खुश है।
उसको जरूरत ही नहीं पड़ती है, ऐसी रहनी सहनी है।
हम को इतना भी मना थी कि पराई मोटर में न
चढ़ो, पैदल करो। चार जनी शाहुकार की बेटी खड़ी
होती थी पर बोल नहीं सकती थी कि गाड़ी में
चढ़ो। डरते थे बोलने में कि दादा भ० सीस ही
उड़ा देगा क्योंकि हम को अन्दर में एक ही बात
थी जो निश्चय हुआ है उसको भ० भी जीत नहीं सकता
है।

ओम

22.2.93

ॐ

अनुभव किसको बोलते है चाहे गुरु को जाने चाहे अपनी
प्रकृति को जानो। तुम दूसरे का अनुभव सुन कर अन्दर
में मट्टर गलते है। किसका अनुभव सुनना माना झूठी पातल
चाटना। सब का अनुभव अपना 2 है जो उसका अनुभव है
वो उसका मास्टर है। अपने अनुभव से सीखते है कि ईश्वर
गंवाया ईश्वर पाया। ज्ञान भी अपने अनुभव से सुनो।
मेरी वाणी सुन कर कोई दूसरे पर आशिक होवे मैं उसको
मूर्ख बोलते है। गीता पढ़ने को भी मैं तुमको क्यों
बोलते है क्योंकि तुम्हारे को ताकत नहीं है प्रश्न पूछने
की कि तुम उससे ऊंचा उठकर जैसे सन्त बोलते है
प्रवचन पराया वचन तुम सुनेंगे तो क्या याद करेगा।
जितनी अपनी life की story तुम सुनेंगे उतनी और
की नहीं। मैं अपनी life की story तुम को कैसे
सुनाऊं क्योंकि तुम लायक है के नालायक है तुम

रीस करके चलेंगे या अपने अनुभव से उगेंगे।

हर एक बीज अपने से उगता है। पौध्या बनता है कि

दूसरे की बीज mix करेंगे। शास्त्र पढ़ेंगे तो क्या

मिलेगा। हमारे जैसा सयाना तो किसको भी सुनेगा।

हम ने nije में किसको भी हराया होगा पर nije

मैं किस पर आशिक नहीं हु चाहे गुरू भी मेरे पर

आशिक था। हम भी कैसे पकड़ गए गुरू से यह

इत्फाक की बात है। हम को कभी ज्ञान में भी नहीं

था कैसे गुरू किया जाता है बस normal natural

चलते थे कोई बुरी बात अच्छी नहीं लगती थी।

अन्दर की सफाई सच्चाई थी। हम को लटक फटक

गुरु से ही अच्छी नहीं लगती थी। अगर लटक

फटक अच्छी लगती होवे तो आज भी होवे पर

सब से समानता का प्यार है real में अन्दर

से प्यार होवे, करुणा होवे बाकी मैं तुम्हारे कहने से चलूं

तो आज चलेंगे कल नहीं। अनुभव अपना होवे उससे जागृत

होंगे दूसरे के अनुभव से हम सपने में जाएंगे उससे क्या

कल्याण होगा। दूसरे के सपने में जा कर मैं क्या करूं

तुम्हारे सपने में जाए या उसके सपने में जाए मरे सब।

जो ज्ञान उठाएगा सच में रहेगा। उसकी जय है बाकी तो

सब खलास है। तुम अगर शास्त्र पढ़ो तो मेरी वाणी

नहीं सुनो। इसमें तुम्हारा निश्चय टूट जाएगा।

प्रेमी - प्र० इसका मतलब बाहर से गुरु को हमेशा झुकेंगे

पर अन्दर अपने निश्चय में रहेंगे।

प्र० :- वो तो झुकतका ही रहेगा गुरू के आगे कि जैसे

अहं न आवे। तुम तो गुरू के पहले A जानते थे कि

B जानते थे। अहं किस का? पर मैं बोलते है मेरी

वृत्ति ऐसी थी जो किस पर भी आशिक नहीं होते थे।

प्रेमी - भ० यह लगता है कि अगर हम बोले गुरु मेरे ऊपर आशिक है तो यह अहं तो नहीं हो जाएगा।

भ० - आशिक उसको कहते हैं जिस पर गुरु खुद आशिक हो जाए meaning करो इसकी। समझो मैं आशिक हूं जिस पर तो वो माशूक होगा, मैं लैला हूं, तो वो मजनु होगा। मैं आशिक हूं इश्क में डूबा हूं तो कौन मेरा प्यार लेता है लुटाता है। मुहब्बत की दौलत किस पर लुटाऊं चाहे वो लुटाए चाहे मैं लुटाऊ एक ही है।

हर एक खुद से अनुभव करना है खुद से हारे खुद से जीते। इसलिए मैं बोलते हैं सब अपने अनुभव से उठो।

प्रेमी - भ० गीता में कहते हैं आसक्ति रहित उदासीन के सदृश्य।

भ० - जो आसक्ति रहित है वो उदासीन है (न्यारा प्यारा) मैं उदासीन हूं तो मेरी interest नहीं है जैसे कर्म किया वैसे नहीं किया।

ओम

26-2-93 Evening

ॐ

प्रेमी - गुरुमुख नाद गुरुमुख वेदं... इसको और खोलिए

भ० - ऐसे भी बोलते हैं न प्रभु जी वसे साध की रसना साधु की जुबान में प्रभु बैठा है। ये लोग प्रभु को visible देखते हैं। चाहे होवे visible तो भी हमको invisible देखना है। ये हमारा पाप है जो हम invisible न देखे हम बड़ी भूल कर देंगे अगर visible देखेंगे तो। जो अव्यक्त है bodyless है तो हम body कैसे देखे उसको। उसका तो कपड़ा भी निराला है क्योंकि वह अन्दर से न्यारा है। अन्दर से न्यारा है सबसे न्यारा है सबका प्यारा है। वह कपड़े वाला है तुम्हारे लिए कपड़ा पहन कर आया

है। जब तक invisible को न देखो तो मैं भी देह में हूं।
आ० से आ० देखो। आ० से आ० अनुभव करो। इसलिए
देह से देखेगा तो उलटा ही ज्ञान निकलेगा। इसलिए
हर धर्म में पै० आते है। पर कोई उनको नहीं पहचानता है
न कुराण न पुराण का भी कोई ~~अर्थ~~ अर्थ कर सकता है
क्यूंकि visible में अर्थ करते है। मुसलमान भी उसको
invisible देखते है पर visible नहीं। अर्जुन को भ० कहते
है तू अर्जुन नहीं है। जभी अर्जुन ही नहीं है तो भ०
की देह कैसे हुई। अर्जुन को भ० है तुम्हारी हस्ती नहीं
है हस्ती है हरि की हरि ओहम I am that.
उसको जानेगा तो he and the नहीं देख सकेंगे।
अभी तुम बताओ visible कितना देखते है invisible
कितना देखते है। तभी तक ज्ञान पूरा नहीं होगा
जब तक invisible को नहीं जानेगा। पूरा अर्थ

शास्त्र का भी नहीं करेंगे। मेरे through गीता सबको
सरल लगती है। जो सत visible है वो पूरा अर्थ कभी नहीं
करेगा। उसको पूछो कर्म में अकर्म को meaning करो वह
जानता ही नहीं है तो अर्थ कैसे करेगा। क्यूंकि उनकी
बेज्जती होती है जभी बताएंगे अकर्म में कर्म। सन्यासी
अकर्मी है पर कर्म में है। सन्यासी कहते है मैं आग भी
नहीं जलाता हुं पर भीख मांगने जाते है वो कैसे?
तभी तो शास्त्रों में बताते है अजगर करे न चाकरी।
दोनों काम नहीं करते है फिर भी कैसे खाते है?
मृग जो है वह दौड़ २ कर आते है अजगर को
दीवार समझ कर अपना शरीर वहां घसाते है तो अजगर
को शिकार मिल जाता है। खाना सबका तैय्यार है
भ० की लीला अजीब है सबको मिलता रहता है।
हमको केवल हृदय में है कि ठगी से नहीं कमाएंगे

तो हमारा गुजरान नहीं होगा। हम सबको सुभाग करते रहते हैं कि ये भी नहीं वो भी नहीं चाहिये। हम सारा दिन बीन बजाते रहते हैं कि छोटा व्यवहार छोड संसार अच्छा ही है।

ओम

27.2.93 10-11 am

ॐ

प्रेमी - भ० तृप्ति नहीं आती।

भ० - ज्ञान में तृप्ति चाहिए वह अपना विश्वास है। जिसके अन्दर विश्वास - - । वो प्रभु है कहां जिसको अरदास करता हुं जिससे मैं मांगता हुं। सारी दुनिया भ० भ० बोलती है, शास्त्र भी पढ़ते हैं, दान पुण्य भी करते हैं पर उनसे पूछो address है? हम राजस्थान में गए तो एक ने पूछा 1st भ० कौन है? तो पूछने वाला कौन है। अपनी तो address है नहीं ये नाम माँ ने रखा 6 दिन के बाद तो पहले तू क्या था?

एक भ० का स्वरूप आया घर में everything is GOD - - बोलते हैं न वहयो वाहगुरु। तुम देखते है एक जगह भी नहीं है। एक पादरी ने बोला बच्चे को मैं तुझे दो apple दूंगा तू बता भ० कहां है। बच्चे ने कहा मैं तुझे 4 apples दूंगा तू बता भ० कहां नहीं है। ऐसी पहेली कोई किसको दे तो समझें। उसकी सत्ता के सिवाय न pen है न पत्ता है। उसके आधार में सब चल रहा है automatic चल रहा है पर मनुष्य ego करता है मैं चलाता हुं। खुदी मैं खराब करती है। कौन कर रहा है हाथ में ताकत किसकी है? कौन हमको चला रहा है analyse करो। भ० खड़ा कर दे शरीर को तो एक sign भी नहीं कर सकता है तो कौन है जो इस भूत को खड़ा कर देता है। क्या कुदरत है जो sense गंवा देती है तो इधर से उधर नहीं चल सकता। हमको

पर दया करनी है या जुबान पर ?

ओम

2·3·93 Evening

ॐ

प्रेमी - 7 अध्याय का 18 श्लोक अति उत्तम गति स्वरूप ज्ञानी भक्त को खोलिए।

भ० - ज्ञानी भगत बोला न, तो भक्त में देखो इतने इधर सब योगी बैठे है इनमें भी कोई उत्तम, कोई उससे अति उत्तम है। वो कौन है जो केवल मेरे स्वरुप में स्थित है। अभी भगत देखो तो कितने मिलेंगे जो केवल भ० के स्वरुप में रहें, ध्यान में रहें। उनको केवल भ० हृदय में होवे। side में माया टका भी नहीं होवे। वो अपने खाने की भी चिन्ता नहीं करता है उसको विश्वास है कि भ० थाली लेकर मेरे पीछे घूमता है तेरी रोजी तुझ को ढूंढे तू दिल विच कर आराम सखी। तुम बताओ तुम को कौन सा अन्दर में दिलासा है कि ये मेरे को खिलाता है मां बाप खिलाता है भाई खिलाता है या फिर कहेगा कि मैं खुद कमा कर खाता हुं। मतलब मन में किसी का भी आधार है अजगर करे न चाकरी -- । क्योंकि उन को भरोसा है राम में। सच्चा सन्त वो है जो एक टका भी अपने पास नहीं रखता है तुम दुनियां में आया तो आसमान से फैका नहीं गया है किसी न किसी घर में आया। वहां उसकी प्रारब्ध है। मनुष्य सारी उम्र खाता भी है और चिन्ता भी करता है। सारा दिन मैं 2 करता रहता है कि मैं तो अपना कमा के खाता हुं तो मैं तो हुई न। सच्चा भगत वो है निराधारी है। वो आधार रख के नहीं जपता है कि मेरे को ये आधार है। चार जने जहां खायेंगे तो पांचवे को भी खिलायेंगे। उसका तो खाना भी सूक्ष्म है वो ज्यादा नहीं खाता, जो ज्यादा खायेगा तो

खेंगेगा भी । इतना व्यवहार क्यों रखे जो गुलामी
करनी पड़े । इतनी माया भी क्यों रखे जो सम्भालनी
पड़े । तेरी रोजी तेरे को ढूंढे तू क्यों रोजी को ढूंढें।
दूसरी जगह फिर देखो कोई कुत्ता है उसको रोजी
समझो नहीं मिलती है तो यह उसके कर्मों का फल है।
कोई पाप कर्म करे तो उसको सजा न मिले क्या?
तो कोई कर्म कैसे पूरा होगा। कोई भी दुख है सुख
है हालत है तो यह सब कर्मों का amount है। amount
में कर्मों का फल है, सिखाने के लिए भ० भी धक्का
देते हैं हम को तो कोई न कोई मगरूरी है।
आज तू बोलेगा मैं भ० हुं पर किसी को भी छोटा
बड़ा देखेगा तो तेरी क्या हालत होगी। नि० भी
देखेगा तू बड़ा बनकर छोटे पर order क्यूं करता है।
मनुष्य (२) पर order क्यूं करे अगर मैं भ० हुं तो

आगे वाला भी भ० है तो उस पर order क्यूं करे,
उससे सेवा भी क्यों ले, पानी गिलास भी क्यों ले, निन्दक
हमी हैं जो सेवा लेते हैं । मनुष्य २ को हीन भावना से
क्यों देखना है, आ० नहीं जाना अपना रूप नहीं जाना।
तुम बेटे बेटी की सेवा करेगा पर किसी भगत की सेवा
नहीं करेंगे । खुद सेवा भली करे पर मांगे नही सेवा जो
लेगा तो नि० शरीर भी खराब कर देगा । उसके हाथ में
क्या नहीं है। कोई भी अहं करे तो नि० उसे मारेगा,
गिराएगा खलास कर देगा। नजर टेढी करे तो - - -
तो उसके आगे हम को डरना है न । नि० से डरना है पर
दुनियां से नहीं । नि० से मेरे को डर है कि किसी
से भी overtake कैसे करु । मुंह से भी शब्द कैसे
निकालूं तो तू यह कर वो कर। सब का आंख
तो है तो वो खुद ही करे हम क्यूं order करे ।

अपने और अपने वालो के लिये तो हम कभी किसी से भी कर्म नहीं करायेंगे । अहो कर्मण की गति न्यारी। कभी भी मनुष्य ढोंग नहीं करे सत्य सरलता नहीं है तो सच्ची नींद भी नहीं है। सत्य सरलता वाले को ही सच्ची नींद आती है । किसी के भी आगे मेरे को बनने का नहीं है। एक के लिए दूसरा तो दूसरे के लिए तीसरा कर्मों का फल भोगता है तो ऐसी ही chain बनती जाती है। ऐसा कर्म ही क्यों करे जो हम को फिर भोगना पड़े, ऐसा कर्म क्यों करे जो फिर भ० को तकलीफ देवे तो फिर कर्मो का फल देवे। ऐसा कर्म ही क्यों करे जो फिर चक्कर भोगना पड़े। Top अहं वाले को ही भ० फिर गिराता है। किसी भी बात में top अहं किया चाहे कामनी में, चाहे कंचन में चाहे कीर्ति में तो फिर भ०

बोलेगा अभी नीचे आओ। किसी का भी अहं भ० को सहन नहीं होता है। देवताओं ने अहं किया तो यक्ष आया वाला दृष्टान्त। देवताओं को जब खुमारी चढ़ गई तो भ० को आना पड़ा। अहं नि० को किसी का भी अच्छा नहीं लगता तभी ऐसी बात करता है। जिसको अहं है तो वो ठगी भी जरूर करेगा वो चतुर चालाक भी जरूर होगा। उस अहं में वो क्या करेगा जो वो अपने को भी ठगेगा तो दूसरों को भी ठगेगा। मनुष्य एक दूसरे का गला काटने का ही बैठा है।

ओम

3.3.93 7 p.m.

प्रेमी - भ० वृत्ति बाहर चली जाती है।

भ० - तुम वृत्ति की बात क्या करते है। तुम्हारा इतना प्रेम होवे भ० से तो वृत्ति जाएगी कहां? इतनी प्रीत भ० से करो जितनी पहले माया से करी थी कितने जन्मों के संस्कार से हम इधर आते है। कौन इतना पुरुषार्थ करता है। कोई 50 pages पढ़ के आया है समझो पहले तो अब 51 पढ़ेगा न। कोई राजा जनक जैसा है कोई और है। सब जन्म 2 पुरुषार्थ करके आते है तभी किसी को जल्दी ज्ञान लगता है कोई born great है, कोई योगभ्रष्ट है जिसने अभी class चालू किया है। योगभ्रष्ट को तो गुरु खुद ही पकड़ के ज्ञान देता है। तेरा मेरा कई जन्मों का इकरार है तो भ० आके जोरी से ज्ञान देता है। अगले जन्म में हुई इकरारी है पर जिसने अभी शुरु किया है तो कई संस्कार लेके भी आया है पर शुक्र है शुरू तो किया। ज्ञान अच्छे संस्कार वाले को जल्दी लगता है। कृष्ण ने अर्जुन को भी बोला तू अच्छे संस्कार वाला है। कोई मनुष्य खर्च कर के भी भलाई करता है और कोई पैसा खर्च कर के भी income tax वाले के पास जाएगा - कहेगा यह इतना कमाया तुम क्यों नहीं देखते है इसमें उसको क्या मिला? यह मनुष्य, मनुष्य है न, पैसा खर्च करके भी बुराई करते है। जिसने अभी शुरु किया है उसे कभी ऊंचा नीचा नहीं देखना। शुक्र है उसने शुरू तो किया है। हमारी इतनी जिन्दगी हो गई हमारे से किसी को भी गलत शब्द नहीं मिला है। एक बार शीशा crack हो जाता है तो फिर जुड़ जाता है पर लकीर रह जाती है। हम एक सत्संग में जाते थे तो वहां पानी देते थे। जो पीता था वो उन

लेते था जो नहीं पीता था वो हाथ जोड़ता था कि

आपने सेवा किया पर मुख से नहीं बोलते थे। यह है

ettiquite प्यार से बोलना, नम्रता से बोलना, हाथ जोड़ना

जो मेरे घर में सेवा करे इतना ज्ञान सुन कर भी तुम

गर्म होते है यह क्या बात है। मरेला शब्द तुम्हारा

निकले

तुम्हारे में ऐसा बोलना नहीं है जो सामने वाले का दिल

खेंच ले। सत्संग में यह बात की कमी है और मुझे

तुम सब से शिकायत है बाकी सब ठीक है। मेरे को

नम्रता प्यार और दिल खेचना आवे।

नैमेतिक कर्म धप करता है पर अन्दर ख्याल क्यों

चलता है। मन क्यों चलता है, बुद्धि क्यों चलती है।

नैमेतिक किया की तो आदत है न। पता नहीं तुम

ख्याल क्या करते है नैमेतिक कर्म तो right होवे न।

अन्दर जीव क्यों चलता है मन भी अपना है, बुद्धि भी

अपनी है, भाव भी अपना है। रोज2 मनुष्य जन्म नहीं

मिलेगा, प्रेमी नहीं मिलेगे सेवा नहीं मिलेगी। जब सेवा

मिले तो जितना हो सके फायदा उठाओ एक2 श्वास

प्रेम में उठे, सेवा में उठे। मरेला शब्द निकले Blood

pressure वाला कभी मीठा कभी तेज बात करेगा तुम

उसके लिए क्या करेगा वो कभी मीठा बोल हो नहीं

सकता है।

ओम

5.3.93 Evening

ॐ

प्रेमी - बेअन्त का अन्त पाना और गुरु का अन्त पाना इसमें

क्या फर्क है?

म० - बेअन्त का अन्त है जो तत्व सर्वत्र है उसको जानना

गुरु का अन्त है जो 5 मिनट भी गुरु किसको ज्ञान

देता है तो उसको ज्ञान लग जाता है। नि० का अन्त

पाएगा चुप हो जाएगा गुरु का अन्न पाएगा तो दूसरे को जगाएगा। मेरे को जानेगा तो चंचलता होगी तो दूसरे को भी जाके बताएगा।

ओम

8·3·93 Evening

ॐ

छोटे बच्चे को कुछ थोड़ी मालूम है। छोटा बच्चा कुछ विचार थोड़ी करता है कि मन क्यूं आया ये क्यूं आया?

गीता अ 13/12 श्लोक

सत और असत दो हो गया। भ० है one आ० है one तो बोले भी कौन? जब है ही one तो two भी कौन कहे? तू ही खुद खुदा है तो सत असत भी कौन बोले? जैसे तुम भक्त और भ० का सौदा करते है पर हम भक्त भ० नहीं मानते। शरीर है भक्त, आ ० है भ०। इक भक्त इक भ० -- । उसका शरीर कुत्ते और सुअर का है। शरीर को भक्त समझ के चलाए जैसे इस भक्त को खिलाऊं, चलाऊं ऐसे इसको भी खिलाऊं पर मैं he और she नहीं हूं। ये शरीर भक्त मिला है इसको ठीक से चलाना है न कि चलना है। ऐसे ही इसको चलाते खिलाते है जैसे घोड़े को चलाते है। इसको मुसाफरी ठीक से करनी है पर कर्म नहीं करना है। देह में आसक्ति है तो कर्म भी होता है पर इससे इतना ही मतलब है कि बस इसकी संभाल करनी है बाकी कर्म नहीं। ये शरीर घोड़ा है मोटर है तू driver है double है not single. घोड़े से उतना सोना नहीं है। देह में आसक्ति है तो कर्म करेगा। तू सारा दिन बक२ करता है मैं आती हूं जाती हूं पर attach ही नहीं हूं तो बकबक ही बन्द है। बाहर भक्त देखा माना अहंकारी है जो भक्त देखता है समदृष्टि रखनी है। समदृष्टि करके देखो तो नज़र आवेगा

मैं भी भक्त देखूं माना देह देखूं तो देह देखा तो
बोझ हो जायगा। तू देह देख कर बात करता है
पर हमको देह देखनी ही नहीं है। हम ही देह
देखेंगे ब्रह्म करके नहीं देखेंगे तो तुमको अपने में
विश्वास नहीं आयेगा। ये पहेली है समझने की
मैं देह न देखूं तो तू भी देह को खत्म करेगा।
मैं तुम्हारी देह को cross करेगा तो तुम सारे जगत
को cross कर देगा नहीं तो तुम्हारे से कोई
युक्ति पूछेगा तो तू देह से ही जवाब देगा।
पर तू बोल तू आ० है तो अपनी प्रेरणा से
चल तुम बताओ तुम सबको अन्दर से प्रेरणा
आती है कि नहीं तुम प्रेरणा को जानते नहीं है।
सं ख्याल तेरे को आता है पर तू जानता
नहीं है और बाहर देखकर अपना Time waste

करते है। तू चाहता है म० मेरे से बात करे तो क्या
बात करे? मेरे पास तो सत्य है बाकी time ही नहीं है
जो तुम्हारे से बात करे। तुमने अन्दर जगत को खत्म
होवे। तुम उसके पीछे हो नहीं पड़ते है बस खाली
म० म० करते है तो आ० सिद्ध न होगी। कोने रामनाम
इक अखर - -। एक आ० को सिद्ध करने के लिए इतने
अक्षर है। कोई(?) योगी बैठकर युक्ति सिखाते है पर
मैं तो lesson बनाते है कि ये मेरा lesson है। सिखाने
की चीज़ नहीं है पर मेरी वाणी से तुम खुद पकड़ो
कि क्या तुम्हारी कमज़ोरी है बाकी सिखाने की ये
चीज़ नहीं है। सिखाने से फिर क्या होगा जो झगड़ा
ही होगा। किसको कोई बोलता है कि तुम्हारे घर
में कोई मर जाए तो तुम को क्या होगा? पर तू
ही नहीं है तो तेरा कहां से आया? सबको

अलविदा कर दो नू भी रामराज्य मे रह मैं भी रामराज्य में रहूं। बेटा बेटी आया कहां से तुम क्यों कर्म add करते है?

ओम

8.3.93 7pm

ॐ

तुम्हारा अन्दर जगत पड़ा है तुम इसके पीछे ही नहीं पड़े हैं कि मेरा जगत नाश होवे। अन्दर ही नहीं जाते हैं मैं कौन हुं मैं क्या करता हुं। इधर अन्दर की बात है या बाहर की? ब्र० ज्ञानी के लिए बोलते है वह mystery है मूर्ख उनको नहीं जानते है। सन्त सब कुछ करेगा दिया जलायेगा मूर्ति रखेगा पर ब्र० ज्ञानी mystery है। बाहर का तिलक उतर जाएगा पर ज्ञान का तिलक हमेशा रहेगा।

अज्ञात को कितना भी नीचे ऊपर करो तो भी अज्ञान है. ज्ञान को कितना भी नीचे ऊपर करो तो भी ज्ञान है। गुरू के ज्ञान में अपने प्रेम की मधानी लगाओ तो मक्खन निकलेगा। मैं बोलते है उस तत्व को पकड़ो जहां कुछ सीखने के लिए बचे ही नहीं। catch करना है। योग वशिष्ट में बोलता है ~~उस तत्व~~ को ~~पकड़ो~~ ~~जहां कुछ~~ बाहर कर्ता भोक्ता - । अन्दर एकदम खाली thoughtless ख्यालों से खाली। ख्याल हम करें तो किसका करें? अभी इधर सब बैठे है सब ownself है। अपने उद्धार में लगे पड़े है। इधर ही इनकी मां होगी तो बक २ करेगा। घर में भी रहें तो अपने उद्धार में रहें। हमको क्या कीचड़ से मतलब है? अभी इतनी अलग २ चीजें है वो सब बोलती है मेरे को use करो मैं थोड़ी इनको use करते है? ऐसे ही जितने भी जगत के प्राणी है सब automatic चलते है हमारा क्या मतलब है जो हम चिन्ता करें। फजूल tax भरते

है। मेरे को ये ही हैरानी लगती है कि सबके
अन्दर में मेरा २ पड़ा है। इस्ती है हरि की पर
मेरा नहीं है। कुछ भी है तो इस्ती उसकी है नहीं है
तो मैं मैं आता है वह इसलि हरि की है। इस्ती
हरि की है माना isness है। नाम भी देखो चुन २
के रखते है।

प्रेमी - मेरा कुछ भी क्यों बोलते है?

भ० - सब मेरा रूप है सब ownself है। अभी दो
जने अकेले बैठे तो सारा दिन क्या बात करेंगे?
गुरु के पास भी कोई २५ घंटा बैठे तो क्या बात
करेगा। अपना आप ही है तो कोई बात ही नहीं है।
मेरा हर बात मे फायदा ही है, घाटे की बात ही
नहीं है।

प्रेमी - भ० अन्दर में असंग कैसे होवे?

भ० - है ही असंग। नि० ने सब दहेज में नहीं दिया
तो मैं क्यों मेरा २ समझें? हमने इधर आके पसारा
क्यों किया है?

ओम

9-3-93 Morn

ॐ

गीता - अध्याय ५/२९ श्लोक मेरा भक्त मुझको सब
यज्ञ और तपो को भोगने वाला है। भ० इसको खोलिए
भ० - इसमें main बोलते है कि मैं तो main हूं और
भक्त भी मेरे को main ही करके देखो कि सब यज्ञ
तप जो कुछ भी करते है वो भी मेरी प्रेरणा और
सत्ता से हो रहा है। समझो तुम कुछ भी करते है तो
मेरी सत्ता के सिवाय नहीं है। मैं ही दयालु हूं जो
तुमने कुछ भी किया जो भी तुम्हारे को power और
शक्ति है ताकत है शफा है वह कराने वाला मैं ही

हूं । जितनी भी ताकत है वह मेरी ही है । कभी २
तुमको फिर अहं आता है कि मैं हूं करने वाला मेरे को
तुम्हारे ऊपर करुणा होती है कि अच्छा इसको यज्ञ
में लगाऊं, सेवा में लगाऊं तो फिर वह अहं करता है
कि मेरे से कुछ हुआ । या तो फिर अहं करेगा तो man
propose GOD disposes. मेरी सत्ता के सिवाय तुम्हारा
कुछ बनेगा ही नहीं तभी तो अर्जुन चारों तरफ से
भ० को नमस्कार करता है कि भ० तू सत्ता न दे तो
हम चल ही नहीं सकेंगे । बीच में मनुष्य अहं करेगा
तो भ० फिर खड़ा कर देगा ताकि मैं (फिर झुकूं) ३ ।
उसको तो अहं तोड़ना आता है न । भ० की अहं से
दुश्मनी है । तुम समझते हैं भ० से काम पड़ा है ?
वह तुम्हारा ऐसा अहं तोड़ देगा जो कमर चट
(चेल च्यवी) कर देगा । तुम्हारा काम पड़ा है भ०

से और नाता रखते हैं दुनियां से तो काला मुंह होगा
इसलिए कितने अच्छे २ लोग भ० से नाता नहीं रखते
हैं कि हम भ० से ~~...~~ निभा नहीं ~~...~~ सकेंगे । तुम अहं
करेंगे भ० फिर खड़ा कर देगा फिर चलाएगा बहुत कठिन
बात है । तुम miser हैं बिल्कुल अंधे हैं तुम भ० की
बात कैसे समझेंगे । मन्न अंधे -- । वह प्रेरणा देता है
कभी २ उसको दया आती है तुमको चलाता है तुम
फिर अहं करते हैं । तुमको वह प्रेरणा देता है पर तुम्हारा
अहं जरें २ फिर खड़ा ही है । एक आदमी जेल में पड़ा
बोला बाहर निकल के भ० का ध्यान करूंगा भ० के
रास्ते पर चलूंगा पर बाहर निकल के फिर माया में
ही गिर गया मैं तो सब पागल को देखते हैं जो भी
भ० से थोड़ी भी जुदाई (विची) करेगा तो भ० फिर
बड़ी दूरी (विची) कर देगा । भ० को तुमने क्या समझा

है । तुम समझते है भ० को खीसे में डालकर
चलेंगे पर भ० ऐसा समझदार है जो तुमको फिर उंगली
पर नचाएगा , फिर २ के फिर गिरा देगा । तोबा २
प्रेमी - जभी मार मिलती है गुरू की तो मन अन्दर
में कोसता है कि तू जीव क्यू बनी जो मार खाई ?
भ० - फिर आगे से ऐसी संभाल करो जो वापस जीव
नहीं बनना ।
प्रेमी - भ० दण्डवत प्रणाम और समर्पण को खोलिए
भ० - दोनों ही ठीक है जो दण्डवत प्रणाम करे फिर
समर्पण भी करे । केवल बाहर का दण्डवत नहीं
चाहिये पर तुम्हारे अन्दर वाला मेरे चरणों में खत्म
हो जाए समर्पित हो जाए । ये शरीर जो है कठपुतली
इसको भ० ने free रखा है कि तू गलत कर्म कर मैं
सजा दूं नहीं तो मेरा जेल खाली हो जाएगा नर्क

खाली हो जाएगा । कितने अच्छे २ लोग भ० की शरण
नहीं लेते है कि हम भ० से निभा नहीं सकेंगे । तुम्हारी
चमदृष्टि गई नहीं इसमें तो डट के आत्म दृष्टि रखनी है
जरूर पर जरूर रखनी है नहीं तो पीछे सबको रोना धोना
पड़ेगा । देह दृष्टि खत्म करनी है बिल्कुल ।
मैं हर शहर में बोलते है कभी ये ego नहीं करना कि मैं
गुरू के आगे हूं ये पीछे है पर हमेशा समदृष्टि करके
चलो । मेरा एक ही आवाज है कि सब समदृष्टि में रहे फिर
गलत कर्म किसी से होगा नहीं कौन तुमको छुड़ाएगा ।
मेरे को सब योगीयों के लिए लगता है कि इधर कैसे
सब हरिद्वार में safe बैठे है जो वैसे अकेली स्त्री आए तो
इतनी safety नहीं है पर जभी मेरे संग में आते है तो सबकी
safety है तो लगता है यहां पर ये लोभ न करें कि भ० के
घर में बैठे ,भ० के पास जाए , सेवा करें, पर सब

अपने own का उद्धार करे । यही सबके लिए लगता है कि अपना उद्धार करें ।

ओम

13.3.93 7 pm

ॐ

प्रेमी - आज बात समझ में आई कि आ० कैसे एक है।

अ० - उलझन में नहीं आओ कि आ० कैसे एक है।
एक घड़ा है उसमें भी आकाश है फिर ~~[illegible]~~ छत है, ~~[illegible]~~ छत को भी उड़ा दो तो महाआकाश हो गया। देह की दीवार तोड़ कर हम विशालता का मजा नहीं लेते है। देह का अहं उड़ाओ फिर तू है नहीं।

प्रेमी - जीव क्या है ?

अ० - जीव भी कल्पना है। अभी बादल है फिर थोड़ी देर बाद देखो तो बादल नहीं होंगे तो बादल गए कहां ? जब बारिश हुई तो बादल पिघल गए। ऐसे हमारे भी बादल गलने चाहिए

पछतावे के आंसू आए तो तू गल जा अ० के प्रेम में। जे गला नहीं तो जैसे अ० को जाना ही नहीं। बीज पिघल गई पानी। कोई २ मच्छी पानी में ही गल जाती है ऐसे शल मैं गल जाऊं ५° मोह छोड़ विकार सहित इस भूत को छोड़ो, पछताव करो। ऐसे जैसे पछताव नहीं पर वियोग लग जाए जैसा गोपियों को लगा तो कृष्ण राधा हो गई राधा कृष्ण हो गया, हर गोपी को इच्छा था कि राधा बन जाऊं तो राधा कृष्ण का part कर सकती है यानि बनना गुम हो गई प्रेम में।

प्रेमी - इतना प्रेम कैसे हो गया ?

अ० - इतना प्रेम वैराग्य से उत्पन्न होगा। इसमें भी देखो क्या मिला, उसमें भी क्या मिला। कुत्ते से कांटा छुड़ाओ तो वह काटने को आता है ऐसे ही मनुष्य से कोई चीज छुड़ाए जाए तो

पाप वैराग्य आया न। लोभ है मनुष्य को कि ये चाहिये वो चाहिये। तो वो आखिर करेगा किधर? लोभ से इधर उधर से इकट्ठा करना है तो क्यों? मम्मी डैडी चोरी करके बच्चों के लिए पाप कर्म करके माया इकट्ठी करते है तो मिलेगा क्या? विवेक बन्द वाला खुश होता है कि बच्चों को ये दिया वो दिया। हमको तो जरै श वैराग्य आता है कि इसमें भी मेरा की। कई गुरुओं को सब शिष्यों से भी मन आता है तो दुखी होते हैं। पर हम बोलते हैं कोई आए कोई जाए मेरा की।

प्रेमी - पाप की सज़ा नहीं पर पाप ही सज़ा देता है।

भ० - तुम्हारा मन ही तुमको सज़ा देता है पर मैं नहीं देता है। तुम्हारा मन कर्म करायेगा फिर भोगायेगा कि तूने क्यों किया बक करेगा कि तुमने ये कर्म क्यों किया कर्ता होके चाहे सुख लिया चाहे पाप किया वो फिर चिन्तन करायेगा। तुम वही फिर जाके मनोरंजन करते है। पर मन बोलता है तुमने ऐसा कर्म क्यों किया पर मनोरंजन में फिर सब अपनी life बर्बाद करते हैं। पर सब अपने को पकड़े कि कर्ता बन के कुछ नहीं करेगा। दूसरे की will से चले पर अपनी will न चलाए। ख्याल तो है इतना सा पर सारा दिमाग खत्म कर देता है। यह कर देता है। ख्याल न मैं doer बन के कर्म करूं जो मन चले।

ओम

14-3-93 Sun Morn

ॐ

गीता अध्याय 18/66 श्लोक भ० कौन से धर्म कर्म छोड़ने है?

भ० - मैं स्त्री हुं मैं मां हुं मैं हिन्दु हुं ये धर्म तुम्हारे मन में कितने पड़े हुए हैं। उस माया को तुम नहीं काटते है। मेरा स्वधर्म क्या है? जो सब कर्म छोड़कर जो मैं single हुं उसको जानो उसमें ही मेरी वृत्ति है बाकी शरीर की क्रिया कर्म धर्म सहज होता रहता है। इसका (शरीर) धर्म ये देखे। तुम तो single में चलते रहते है पर हम double में चलते है इस शरीर के धर्म में मेरा मतलब ही नहीं है। वो सहज क्रिया होती रहती है। निश्चय भी बस एक वारी पक्का हो गया थे अभी चिन्ता ही नहीं है। देह का चाहे आ० का सीधा रस्ता लेना है। सीधा चलेंगे तो माया भी रस्ते में नहीं आयेगी। किसी को भी life में इन्तजार नहीं कराना। कोई तुम्हारे लिए ये न सोचे कि ये कहां गई। सब पूरे Time पर regular घड़ी जैसे चले। wavering mind वाला कभी भी सिद्ध को प्राप्त न करेगा। कितना भी मेरे घर में शोर गोर होवे पर हम अपनी route में चलेंगे। तुम तो सब निकम्मे हो तुम्हारा ध्यान पता नहीं किधर है? आपस में एक दूसरे को जरूर सुझाव करना है। किधर भी जो बह गया तो कैसे सिद्ध को प्राप्त करेगा। हमारी सारी प्रकृति regular चलती है। थोड़ा मिला है उसको भी खाना पीना देंगे पर बह नहीं जाएंगे कि ये चीज tasty है तो ज्यादा खा लेवें। हम yes No का power जानते है।

अभी हमने निष्काम बोलो है तो क्या जो

पागल भी सामने आएगा तो उससे भी बात करेंगे क्या?
पर हम तो पानी भी मुफ्त में नहीं गिराएंगे। T.V
वाले भी बताते है कि Bath-room का पानी waste
नहीं करो। खाना भी मैं नहीं पकाता पर चूल्हा पकाता है
डाल कर बैठ जाए पर देगरे पर चढ़ कर थोड़ी बैठ जाएगा।
इसको सिद्धि को प्राप्त करके फिर संसार में कदम
रखना है। जब तक वाणी से इच्छा से शब्द से ऊपर
न हो गया तो तब तक माया पकड़ सकती है इसे में।
प्रेमी - भ० सिद्धि का मतलब control करना है क्या?
भ०- सिद्धि का मतलब control नहीं पर जिस रस्ते
पर निकले है उस मार्ग पर सीधा चले। संसारी
काम जो है वो भी दूसरे को सौंपेंगे कि ये काम
तू कर तो काम तू कर और मैं गई सत्संग में।
वो गन्द साफ करने के लिए सारा संसार पड़ा है।

तुम परिवार वालों को प्यार नहीं करते है तो वो कैसे
तुम्हारा काम करेंगे। मेरे को अच्छा नहीं लगता है कि
किधर भी मैं बन के बैठूं। बनना कभी नहीं।
ओम

15.3.93 Evening
ॐ
गीता अ 9/31 श्लोक मेरा भक्त नष्ट नहीं होता है।
भ०- जिसका मन भ० में है और वह भक्त है तो वो
नष्ट कैसे होगा? तो total वृत्ति भ० में होगी लगातार
मन भ० में होगा तो वह नष्ट कैसे होगा? अपने को
देखो भक्त होने के लायक हूं। कहने से नहीं पर
रहनी सहनी करनी भ० के निमित्त है या किसके
निमित्त है? अपने से पूछो भक्त है या नहीं?
गीता अ० 10/42 श्लोक अंशमात्र
भ०- सारे जगत को एक अंशमात्र में पकड़ के
बैठा हुं और सुख भी अंशमात्र ही है। अंशमात्र

जगत को धारण किया है। जगत में तुमको रस
आता है वो अंशमात्र है सत्ता तो आ० की है
पर क्षणिक रस आया और चला गया। बिजली व
जुगनू की तरह क्षणिक मात्र सत्ता है पर खुद प० नहीं
है। अंशमात्र आ० की सत्ता है तो रस भी वो ही है।
सारा जगत मेरे अंश में व्यापक है। मैं full तृप्त
हूं। माया देखने में आती है जैसे कोई विषय
विकार का रस आता है अंशमात्र आता है। जो
भी चमड़ी है वो देखने का खाने का रस है वो
अंशमात्र है पर है आ० का ही वो रस। स्त्री
समझती है मर्द में रस है मर्द समझता है स्त्री
में रस है पर जानता कोई नहीं है कि असली
रस किसमें है। खाली जड़ माया से तुमको
रस भी न आए, जड़ चीज से रस कैसे

आयेगा। आज लकड़ी है, दीवार है, पत्थर है सब मैं ही
हूं। चेतन और जड़ दो प्रकृति है। जितने भी जानवर
है मनुष्य है प्राण जिसमें है वह चेतन प्रकृति है। जड़
पलंग में भी चुरपुर है वह पुराना होगा, भिंडी में
बदबू होगी। सब चीज second hand होती है।
शरीर भी second hand हो जाता है। खाली आ०
जो है unchangeable है। तू सदा एक रस full (पूर्ण) है
तृप्त असंग रह सकता है। तू ही एक से अनेक
हो गया फैल गया है। अभी कुछ भी करेगा
तो जीव बनेगा। मैं जो हूं सो हूं, मैं ही तो हूं।
एके २ रस अभी नहीं आता है। एके २ में वृत्ति
नहीं रखनी है। कोई भी चीज अज्ञानी खाता है
तो उसकी लार टपकती है बोलेगा कल फिर ये
बनाना। हम तो खाते हुए रवाते नहीं देखते

दुःख देखते नहीं स्पर्श करते दुःख स्पर्श करते नहीं पहले ही तृप्त है तो स्वाद भी कहां से आया? पहले से ही मैं तृप्त हुं आनन्दस्वरूप हुं तो खुशी कहां से आयेगी जहां खुशी है तो रंज भी है, सुख है तो दुःख भी है। कौन सी सामग्री इकट्ठी करें जो सुखी हो जाएं। विचार की बात है सुनते ही नहीं। अभी कोई आया तुमको खुशी हुई, मिला तो खुशी हुई तो पहले रंज था क्या? रंज और खुशी है तो मैं जीव हुं पर सब में मैं ही तो हुं। ये है सच्चा अनुभव। ये अनुभव का ज्ञान है। इस ज्ञान के लिए बहुत silence चाहिये मगज खाली होगा तो मेरी बात समझ में भी आयेगी कि भ० क्या बोल रहे हैं।

ओम

16·3·93 Evening

ॐ

प्रेमी - भ० दृश्य से कैसे ऊपर उठें? उसके लिए क्या तपस्या करे

भ० - कोई तपस्या है ही नहीं, दृश्य है ही नहीं भ० ही है। दृश्य तो भ० का ही रूप है नि० सा० है। निर्गुण आप सगुण भी सोई कलाधार जिन सगली मोही। निर्गुण ही सगुण है तो दृश्य कौन सा? ये सब भ० के गहने हैं और सारा जगत भ० का आइना है उसमें सब अपना आप ही देखता है। अगर तुम जिज्ञासु हैं तो ये बात समझेंगे अगर मूर्ख है तो घर में बैठे रहो। जगत दूषण नहीं है भूषण है। अपने अन्दर में जानो तो हम किसका भी दोष कैसे देखते है? जो और कोई करता है वो तुमने भी किया है जो अर्जुन की बकवास है तो तुम भी वो ही करते है। या मैं अर्जुन हुं या कृष्ण भ० हुं। दे० अ० मेरे को छोड़ना नहीं है तो दोषदृष्टि है नहीं ये वो सब एक ही है। सब सिर के सांई है।

किसके भी कम ज्यास्ती नाना हैंपे और वह अन्दर

में है तो क्या? अपने से पूछो तुम सत्य के रास्ते

में चल रहे हैं जिज्ञासु हैं तो ज्ञान दूषण देखेंगे

या भूषण किसकी भी हम महिमा भी कर सकते हैं।

निन्दा भी कर सकते हैं हम अगर हंस हैं तो दूध

पियेंगे पानी छोड़ देंगे। हंस बुद्धि है तो सबकी

महिमा ही करेंगे। तुमको कैसे दूसरे का विकार दिखना

है सबने ही कुछ न कुछ तो किया ही है पर सबको

अपना विकार भूल जाना है दूसरे का दिखता है। जीव

अपने को भूल के कुत्ते की तरह दूसरे का विकार देखके

भौंकता रहता है। ऐसी की नज़र

होवे जो सीधा सोने पर नज़र जाए। हम सोना छोड़

के गहना क्यों देखते हैं गहना तो गहना ही है।

सोने के सिवाय गहना नहीं है गहना तो artificial

है foundation तो सोना है। ब्रह्म के सिवाय कुछ प्रगट

ही नहीं है और कोई power नहीं है वो ही फैला है पर

तुमको वो सत्ता समझ में ही नहीं आती है तुम्हारी आंख

में खखरा है। उसने ही सब रूप धारण किए हैं। तुम

ऐसे नर्ई पागल हैं जो सत्ता नहीं देखते हैं दोष दृष्टि

रखते हैं। तुम नर्ई हैं वास्तव में खुद ही ब्रह्मस्वरूप

है चाहे मैं तुमको ज्ञान दूं तुम भले मेरे को विकार

बताओ पर मैं क्या सारा दिन विकार २ करूं तो मेरी

दृष्टि खराब हो जाएगी। तुम चाहे हमको बोलो कि

भ० हमारे विकार बताओ पर हमारी भावना सत्य पर ही

है। B.C में मेरे को जाना ही नहीं है हम एक आदमी

को भी अच्छा नहीं बोलेंगे हम सत्य ही देखते हैं।

तुम ही बक २ करो तुम ही कर्म बताओ, तुम ही विकार

बताओ हमने तुमको free छोड़ा है। काला मुंह

तुम्हारा ही होगा तुम कम ज्यास्ती देखते है। कभी न चैन से सोएगा -- । मैं किसको तंग करके और अच्छी नींद करें ? मैंने तुम्हारा मन ही भीटर रख दिया है जो वो तेरे को भगाता रहता है किसी को तंग करके तुम अच्छी नींद नहीं सो सकेंगे। दुख सुख नीच पापी सब मन ही है मैं क्यों कुछ भी बोले किसी को भी ? मैं क्यों भकरवी बनें जो तुम्हारी जरूम पर बैठे तुमतो ऐसे जिज्ञासु है जो मेरे को भी भकरवी बनाने आते है। ज्ञान की ताकत से तुम्हारे ~~सब~~ पाप जाएंगे बाकी मैं माफ करे तो भी कुछ नहीं होगा। अपना प्रायश्चित करो।

प्रेमी - गीता अ० 7/9 श्लोक पृथ्वी में पवित्र गन्ध मैं हूं।

भ० - पृथ्वी से केसर निकलती है। अनन्त चीजे धरती से निकलती है सबमें अपनी पवित्र गन्ध है। धरती तो सब देती है क्या नहीं देती है पर तुम्हारा शरीर भी धरती है, दुर्गन्ध देता है। ईश्वर की धरती से तो मीठे फल निकलते है।

प्रेमी - भ० योगक्षेम का भार सतगुरु उठाते है। इसे खोलिए

भ० - जो भी तुमको वचन चाहिए कैसे ? वचन देकर सतगुरु तुम्हारे अन्दर श्रद्धा डालते है फिर रक्षा भी करते है पालना भी करते है नहीं तो तुम ज्ञान संभाल नहीं सकेंगे। उनके सिवाय वो ताकत देते है श्रद्धा देते है भावना भी क्या नहीं डालते है ? कैसे पौधा बड़ा होता है। धरती कैसे पौधा बड़ा करती है बच्चे कैसे बड़े होते है।

प्रेमी - भ० Drive में जाते है तो अन्दर में बोलना पड़ता है कि भ० ही बैठा है जबकि है ही भ० तो बैठा है क्यों आता है ?

भ० - तुम्हारी दृष्टि में वह बात आई नहीं है

जो तुम सबसे मुस्कुराओ जैसे भ० देखो जो
वह कुछ भी करे तो मेरे को लगे ऊपर ही उठा रहे
है। opposition ही ऊपर उठाती है प्यार से नहीं
उठते है सीधे २ नहीं उठते हैं। opposition आएगी
तो improvement करेंगे।

प्रेमी - गीता अध्याय 18/13,14 श्लोक

भ० - कोई लेने वाला कोई देने वाला कोई use कराने
वाला कोई use करने वाला कोई चीज सब बात मिला
के हेतु बनता है कारण। अभी देखो ब्रह्म है ब्रह्म
में 3 है अस्ति भाति प्रिय और नामरूप तो 5 हो गया।
वैसे ही इसमें भी लेने वाला देने वाला प्यार करने
वाला पुरुषार्थ वाला सब एक हो गए।

प्रेमी - सत्ता सामान्य है संस्कार की विशेषता कैसे
काम करती है।

भ० - किसी को सत्ता का मालूम नहीं है कि सत्ता क्या है
ये जितने भी बैठे है वह अपने संस्कार को change करे
तब जानेंगे। मच्छी जब उलटी होती है तब पानी पीती है।
पानी बिच मीनी प्यासी --। ज्ञान स्वरूप पानी तभी पी
सकेंगे जब उलटे होंगे। पर ये सब लोकारीत में ऐसे
फंसे है जो लोकारीत आएगी तो मेरे को भी छोड़ के
जाएंगे। कितनी तुम्हारे से हिम्मत है जो यहां No Yes
कर सकेंगे ये सब पागल बैठे हैं जो सारा जगत अन्दर
लेके बैठे है। तुम्हारे अन्दर अब तक जगत की isness
है हमारे अन्दर जगत की isness नहीं है तभी तुम्हारे
से पूरे है meaning ही नहीं है मन में जगत की।
ओम

18.3.93 7p.m

ॐ

प्रेमी - मोह है भ०।

भ० - तू जीव है ये जगत है तो काला मुंह करो।

प्रेमी - मरने मुड़ने में घुटन होती है।

भ० - मेरे को खुशी से ख्वाब अच्छा लगता है। मरने से अच्छा लगता है। सारे दिन कोई मारे मैं मुस्कुराऊं। मरने में ही अच्छा है सतगुरु क्यों आगाह ...। मरके फिर जीने का है। तुमने पहले कोई न कोई कुर्सी लिया है। तुमको कीर्ति अच्छी लगती है। कीर्ति का कालामुंह होता है। ज्ञानी लोग खराब हैं मेरे को उलटी आती है जो कोई गुरु से मौत न खरीद करे गरीबी न खरीद करे। मैं गुरु से गरीबी खरीद करूं। शाहुकार का सत्यानाश है शान्ति नहीं है उनको बिल्कुल चाहे कितना भी करोड़ रखे। उनका बैंक से नाता है तो काला मुंह है। वैराग्यशतक पुस्तक में

लिखा है शाहुकार से दोस्ती नहीं रखना। जहां झुकना पड़े ऐसी शाहुकारी क्या करेंगे। धीरे २ करके सब बातें आएगी पैसे से। इसलिए ज्ञान कहता है गुरु से गरीबी खरीद करो, कुर्सी नहीं, हमेशा अपने को नीचे रखना है।

जो जो कुर्सी रखो तो झुकना मुश्किल है। हम सुनने वालों को भी कहेंगे मेरी भूल मेरे गुरु को भी बताना, मेरे को भी बताना, हम घर में बच्चों को भी बोलते थे मेरे को free बोलना मेरे को गुस्सा नहीं आयेगा। कोई बोलेगा नहीं opposition नहीं होगा तो काला मुंह होगा। जिसको ज्ञान सुनाओ जो लड़ने आए तभी तुम्हारे मगज का गोबर निकलेगा। ये एक बात है कि सबको दूसरे का विकार जल्दी दिखता है तो तुम्हारे लिए ज्ञान सरल हो जाएगा। मेरे को नफरत आती जो बोलेगा मैं ज्ञानी हूं वो गुरु को भी नहीं सुनेगा। सुनेगा गुरु से ज्ञान से बाल कोई गलती बताए जो मैं

अपने को मिटाऊं । तुम्हारा सुधार कौन करेगा गुरू तो परदेसी है ये सब सिखाएगे (सुनने वाले) इन सबको दूसरे की भूल जल्दी दिखेगी अपनी देरी से और तुम वचन किसी का सेह नहीं सकते है। ये weakness है तुम्हारी। हमेशा झोली फैला के बैठो। सीखने का है हमको और नीचे आओ और नीचे। तुम मास्टर बनते है I know करते है। ये बहुत खराब चीज़ है। हिन्दुस्तान में I know बहुत है शिष्य को कहेंगे तुम क्यू भूल बनाते है। I know आ गई फिर सीखने में brake आ गई। सीखने का दरवाजा खुला रखो तो कहते हैं बकीन सिर्ई बात---।

हमारे पास एक वकील से मेरा काम पड़ा वो सबको ज्ञान सुनाता था। मैंने भी कुछ बोला, तो मेरे को ही ज्ञान सुनाने लगा। उसका बेटा ग्रेव शान्त हुआ तो weak हो गया हमने उस वकील को बोला कि इतना जो हमने वशिष्ट सुनाया कि जगत नहीं है तो रोना क्यों है। हमने देखा है गुरु ने मार नहीं दिया है आपे ही वशिष्ट पढ़ते है तो time पर fail है। गुरु की मार न पड़े तो कैसे सुधरेगा। गुरु की मार किसको पड़ेगी जो surrender करेगा।

ओम

21.3.93

एक नर MORN ॐ

प्रेमी - आखन आँखा सच्चा नाम इसको खोलिए

श्र० - अद्वैत मत जो है था तो पहले वाले पै० बोलते है अद्वैत में कोई टिक नहीं पाता है इसलिए सा० भक्ति कराते है। तुम बोलते है आखन -- । आगे जमाने में धर्म के ऊपर freedom नहीं थी। मन्सूर ने अनहल बोला तो उसको फांसी पर चढ़ा दिया। ये freedom पहले नहीं थी सच बोलना मना अपना सीस उतारना। जो आज freedom है वो आगे जमाने में नहीं थी।

प्रेमी - ये भी अर्थ है क्या जो आदमी हमको सच नहीं बता सकते है।

श्र० - पहले तो वो बात है जो सच बोलने से सीस काटते थे आज समझो हम सीधा बोले मर्यादा छोड़ो तो कह नहीं सकते है तुम भी नहीं सहेंगे तो दुआ न। हम भी छोड़ने के लिए तैयार है तो तुम्हारे घरवाले फिर झगड़ा करेंगे। हमारे जैसा तो सब मर्यादा कट सकते थे। मैं तो सबको बोलते थे हमारे time में जो भी मेहमान आते थे हम कहते थे अपने time पर हम सत्संग जायेंगे। हमारी जो सत्संग की खुशी है वो हम पूरी कर सकते थे। तुम सब don't care नहीं कर सकेंगे क्यूंकि तुम्हारा अद्वैत का बीज पक्का नहीं ~~है~~ है, निर्भयता का बीज पक्का नहीं है थोड़ा मनोरंजन करते है क्यूंकि ये मनोरंजन न करे तो पागल हो जाएंगे। जोरी से त्याग करेंगे तो पागल होंगे। पर खुशी से त्याग करेंगे तो आनन्द मिलेगा। हम बोलते है बीज पके और गिर जाए। फल पकता है तो गिर जाता है। कभी२ कोई कच्चा फल गिरता है तो पकता नहीं है हम बोलते है फल पके और गिरे।

प्रेमी - श्र० बीज पकने के लिए क्या पुरुषार्थ करे।

भ० - ज्ञान है अन्दर तो अज्ञान क्या करेगा। इतना ज्ञान में डूब जाए सीखने सिखाने में नहीं। तुम देखो तुम्हारा शरीर ही अलग हो जाए जो कुछ भी भासे नहीं क्योंकि तुम्हारा बीज कच्चा है तभी मैं छुड़ा नहीं सकते हैं।

प्रेमी - भ० सीखने से ज्ञान नहीं होगा वह कैसे?

भ० - सीखना क्या है। सीखते है पर तुम अन्दर नहीं जाएंगे ध्यान नहीं करेंगे, विचार नहीं करेंगे तो क्या होगा। जो मैं एक भी point बोलें उस पर विचार करो कि मैंने हस्ती कितनी गवाई है हम अगर हस्ती न गवाए, मुर्दा न बने तो कैसे होगा। हम अन्दर में इतना अभ्यास करें जो एकरस रहें फूल पड़े हमारे ऊपर या धूल पड़े 24 घंटा हम मुस्कराते रहे। जीव थोड़ी हूं जो हिल जाऊं तुम सत चित

आनन्द स्वरूप हो जाओ। कुछ भी आवाज निकालते हैं तो तुम्हारे में कुछ है। मुर्दा आवाज निकालता है क्या। तुम भी ऐसे मुर्दा हो जाओ। दृष्टान्त चला - बोला क्यूं। पंछी ने टां किया तो शिकारी ने shoot किया। उसको संस्कार ये याद था कि मेरे को मौन करना था मैं क्यों बोला। तुम बताओ तुमको बात करने की आदत है या नहीं? साधु होके तथास्तु क्यों बोला। साधु का काम है निश्चय कराना आ० का या बेटा देना? हर आश्रम में कानून है आपको freedom है तो वो freedom तुमको emotion में लाती है। तुम एक शब्द की कीमत नहीं करते है तभी emotion में आते है। आज तुम नौकर रखेंगे तो एक बार सिखा देंगे पर बार 2 कहेंगे तो आखिर ये जमीन कहां लेके जाएंगे। हम तो मौन करेंगे एक बार, सिखाएंगे अच्छा होवे

तो ठीक है नहीं तो हम नौकर बन के खुद सेवा करेंगे पर बोलेंगे नहीं मेरी मौन से वो सीख जाएंगे। eg उदयपुर और माथेरान का। मैंने कभी life में आवाज करके नहीं सिखाया है मुस्कुरा के चलते हैं मैं क्यों कर्म बनाऊं। मेरी मौन से सब सीख जाएंगे मेरी life में ये ही आदत थी कि कर्म नहीं बनाना है लेन देन नहीं करनी है न ही सेवा लेनी है।

ओम

21.3.93 10 am

ॐ

प्रेमी - भ. ज्ञान को सरल ढंग से बताइए।

भ. - सरल है कि तू Be still हो जाओ pathless land (रास्ता) ये रास्ते से जा रहे हैं फिर वापस आ रहे हैं तुम taxe वाले को बोलोगे चलो 2 Hurry up करेंगे। तुमको घुमा फिरा के वहीं ले आयेगा। ध्यान समाधि जप तप सब करो पर अन्दर की enquiry कुछ और है। You are not ये ज्ञान है तू Body नहीं है। इसमें difficulty क्या है जो अपने को देह न समझे शान्त मौन गम्भीर हो जाओ। aggressor होके बात ही नहीं करना। aggressor बनेगा तो देह ही बनेगा। aggressor बन के शब्द नहीं बोलो। हम aggressor बनेंगे तो जीव बनेंगे देह बनेंगे खाली तू defence में बात कर। कोई बात पूछे तो नम्रता भाव से जवाब देंगे जो उसके दिमाग में बैठ जाए। डैडी तीखा बोलेगा तो बेटा भी तीखा बोलेगा फिर डैडी

jump करेगा कि मेरे से बेटे ने तीरवा बोला। बेटा नहीं friend है friend. Be nothing Do nothing कुछ भी बनो ही नहीं। करने के लायक कुछ रहा है? इतने aged लोग बैठे हैं अपनी उन्नति के लिए life में क्या किया है।

प्रेमी - ये ज्ञान कैसे समझ में बैठे?

भ० - पैसा बैठता है स्त्री बैठती है interest बैठता है बाकी मेरी बात समझ में नहीं आती है।

प्रेमी - भ० मन स्थायी नहीं रहता है।

भ० - किसी से aggressor होके बात नहीं करो ये मेरा एक वचन लो। सवाल जवाब मेरे से करो बाकी सारी दुनिया से अतृप्ति मिलेगी। मेरे से बात करेंगे तो हमेशा के लिए तृप्त हो जाएंगे। गुरु तुम्हारे से कम ज्यास्ती नहीं बात करेगा काम की बात करेगा। तुम लोगों ने किसको भी समझाया है तो समझा है? गुरु तुमको जगाएगा

तुमने कितना भी कमाया है एक दिन में Building जल जाती है तो तुम क्या कर सकते है? जैसे कोई तंदुरुस्ती बिगड़ी हुई होवे तो पैसे से तुम बना सकते है?

प्रेमी - भ० egoless कैसे होवे।

भ० - सवाल है ego करे तो कौनसा करे? इधर भ० है तो ego कौन करे? मिट्टी का पुतला अभी ego कौन सा करता है मेरा तुम्हारे से सवाल है कि ego करता कौन है सोचो ~~मेरे~~ मरो मिटो कि कौन ego करता है? देह मन बुद्धि जड़ है तो कौन ego करता है? मेरे सामने ही सिर को फोड़ो कि कौन ego करता है? सच जो है वो शान्त है। सत्य में आवाज नहीं है न मुर्दे समान पड़ा है बीमारी में तो कौन ego करता है? शरीर है पत्थर जैसा जड़, देह है जड़ वो थोड़ी आवाज करती है? इतना ध्यान सिर पर रखा है जब सिर फट रहा है तो ध्यान क्या करेगा? तुम्हारा

देह में मन है दे० अ० आया कहां से ? क्यों तुम मा
और सास बनती है ? तुमने कभी ध्यान दिया है कि मेरा
स्वभाव क्यों निकलता है ? अहं कहां से आया ? बनते
है तो मार खाते है । ऐसी तलवार अपने को लगाएं कि
ये किसने आवाज किया । दिए में तेल नहीं है तो लालटेन
जलाओ तो फरफर करती है ऐसे खाली दिमाग की
निशानी है फरफर करना । कभी तुमने ध्यान दिया है कि
मेरे में खून की कौन सी कमी है । दिमाग में तेल नहीं होगा तो
फरफर होगा । "कम कूत गुस्सा बहुत" भोजन कम खायेंगे
तो गुस्सा बहुत आयेगा । तुम बुद्ध भ० की मूर्ति देखो
कैसी शान्त है ।

प्रेमी - विकार होता है ।

भ० - विकार है देह में, देह तो नौकर है। नौकर से
भजन करके बैठेंगे क्या ? नौकर से सोयेंगे क्या ? नौकर
है 10 इन्द्री " मन उससे काम लेना है । नौकर से काम
लेते है निष्काम सेवा प्रेम करें । ये शरीर मिला है नौकर
प्रेम करें । ये शरीर मिला है नौकर उससे कौन सा काम करें
जो मुक्ति पाएं । मुक्ति पाऊं या तू मा करके नर्क में जाऊं ।
हम देह से सच्ची नौकरी करे । पहले दिमाग और दिल की
value करो । भ० से नाता रखें या दुनियां से ? पहले दुनियां
में आके ढूंढना चाहिए कि जाना है कहां ? फूल पूछे
गुलदस्ता कहां से आया, गुलदस्ता पूछे फूल कहां से आया।
तेरे अन्दर भी वो ही है बाहर भी वो ही है। तुम पूछते
है भ० कहां है । सब बाहर रुलते रहते है । दर्शन सब
बाहर देखते है पर जो देख दिखावे - । सूरज छिपा है
बादल से, सूरज है पर बादल ढक के बैठा है ऐसे आ०
प० है पर दे० अ० की चादर से ढका है । चादर को
छोड़कर बैठो । तुम्हारे से हुआ क्या है । तू लीला

बैठ के देख जो हो रहा है सब भ० के हुकुम से हो रहा है। सब रूप प्यारा है। तुम काला ~~चिड़~~ चिढ़ा क्यों देखते है सब उसका ही तो रूप है। भ० नंगा नहीं आता है। कोई भी सब्जी फल छिलके के सिवाय नहीं है। ऐसे देह है छिलका, छिलके में क्यों अटक गए है? तुम बोलते है मेरे को गाली मिली तो छिलके को बात कोई सुनता नहीं है। कहां भी ~~fee~~ fee भर के जाते है तो out नहीं होते है (games) ऐसे यहां भी out क्यों होते है? स्वभाव क्यों निकल आता है?

ओम

23.3.93 morn

ॐ

प्रेमी - भ० समानता योग पक्का नहीं होता सबमे same आ० नहीं दिखती है।

भ० - अपना मौत जिसने किया होगा दे०अ० छोड़ा होगा तो समानता योग आयेगा। ऐसे अंधेरे में रोशनी नहीं आएगी पर रोशनी आई तो अंधेरा रहेगा ही नहीं। दे०अ० है तो अंधेरा ही अंधेरा है पर तू जीते जी गुरु के सामने अपनी लाश देखो कि मैं मरा पड़ा हूं। गुरु के पास आओ तो अपना मौत अपनी लाश देखो। लाश देखेंगे तो आत्म ज्ञान प्राप्त होगा। तभी तो सबको ये ज्ञान कठिन लगता है कि मेरी आँख देखे और बके नहीं। तो अपने को सूरदास का मिसाल दें कि सूरदास देखता नहीं है तो बकता भी नहीं है पर आँख इसलिए मिली है क्या कि देखे और बके? तू प० का दर्शन न करके कुत्ते बिल्ले का दर्शन करना है। भले हमारा

इस बर्तन भी टूट जाएगा मैं बोलते हैं हमारा 10 जाएगा तो 20 आ जाएगा। किसको जरूरत होगी तभी तो लेवे जाएगा हम फिर भी भरपूर हैं पल में तो होनी ही है सब कुछ। शादी भी पल मौत भी पल है सत्संग भी पल है। पल है तो भरपूर ही भरपूर रहेंगे। खूटेंगे नहीं कभी भी। तुम नहीं बोलना कि मेरा बर्तन चला गया। तुम आए थे तो कितनी crockery साथ में लाए थे कितनी cuttlery लाए थे। भाई का 4 चमच जाएगा तो रोएगी कि ये मेरा चमचा नहीं है। ये मुसीबत है घर संसार। मालूम नहीं तुम्हारा कौन सा चमच था सोने का था कि चांदी का था। सारा दिन तुम्हारा मन टिक २ करता रहता है। घड़ी की जैसे टिक २ है ऐसे ही तुम्हारा मन भी व्यवहार में टिक २ करता रहता है सत्य में कोई टिक २ है ही नहीं।

अभी सब कुछ अर्पण कर दिया तभी तो बोलते हैं कृ० अर्पण। अच्छूट पिओ तो भी कृ० अर्पण ऐसे ही शरीर सहित सब कुछ कृ० अर्पण कर दो। वो ब्राह्मण को अकल नहीं है जो तुमको अर्पण कराए सब कुछ। वो तो अर्पण में केवल तुलसी का पत्ता डलेगा पर तुम्हारा शरीर पत्र है पुष्प मन है सब कर्मों का फल जो भी निकले वह सब अर्पण है अभी सब कुछ अर्पण कर दिया तो अपने से पूछो बाकी क्या रहा? कौन रहा? सब आने वाली मरने वाली चीज़े हैं। हमारे घरवाले हमारा शरीर सब आने जाने वाले हैं। ईश्वरीय दुनिया है इसमें सब ठीक ही ठीक होता है। ईश्वर ही ईश्वर है। ऐसा तुम्हारे मन में अपने को बनाओ कि जो कुछ भी होता है सब ठीक ही ठीक है नहीं होता है तो भी ठीक है। उसमें भी प्र० का राज़ है। न

घाटा है न नफा है । तुम हमेशा बोलो I am full

हम full हैं । तुम फायदा और नुकसान देखेंगे तो

अंधे होंगे । फायदा नुकसान किसका ? आए थे सृष्टि

में तो कितना लेके आए , जाएंगे तो कितना लेके

जाएंगे मैं तो ऐसा यत्न देखते हैं कि हमारे पास

हर कर्म हर सेवा गुप्त रूप में होती है। हमारे कर्म

का show नहीं है । होता भी सब है पर दिखता नहीं

है ।

ओम

(ओम)

प्रश्न - ओम अक्षर उच्चारण को खोलिए ।

उ० - उच्चारण २ नहीं है मतलब है उसके अन्दर शुरुआत

होवे ओम से तो ब्रह्मशक्ति जागेगी । स्वास २ में ओम आवे

ही चलता है चलाना नहीं पड़ता इतना ध्यान में ओम हो

जाता है। फिर धीरे २ ओम भी खलास होके ब्रह्मलीन

हो जाएगा जो मैं भी ब्रह्म , वो भी ब्रह्म और पूर्ण शान्त

२ हो जाएगा । वो इतनी एकान्त में बैठ के शान्त होना है

प्रैण में देखो कैसे ओम ही है । उसके ध्यान में हम

बैठेंगे तो कहां भी बैठ हमारे अन्दर माया नहीं जाएगी।

चाहे कितना भी शोर होवे फिर भी कोई माया अन्दर

नहीं जाएगी । समझो एक दफा तुमने इस ओम में

रहके पूरा ध्यान किया फिर इस बीच में जो भी सं०

आए तो देखो मेरा की मैं क्यूं बनूं , ऐसे ख्याल

को Deny करना है। एक second भी ख्यालों को,
सं॰ को सत्ता नहीं देना है उसमें चाहे आंसू बहें, घुटन
होवे मन रोए पीटे। मन कहेगा बाहर चलो पर हम सत्ता
नहीं देंगे। सब आपे ही होगा एकान्त में। एकान्त की
जगह इसलिए है अपने शहर से दूर जहां कोई पति नहीं
बेटा नहीं, सम्बन्धी नहीं नामरूप नहीं। इतनी एकान्त की
जगह में तुम मनोरंजन कैसे करते हैं मैं हैरान होते
है। किसको भी हम अकेले room में क्यों रखते हैं
जो दूसरों की shadow भी मेरे को नहीं चाहिए
जो मन बोले कि ये बैठा है। बात तो न करें पर
~~मन~~ ~~अन्ने~~ आँख भी न देखे कि कोई है। मैं इतना
खिलाफ हुं shadow के।

ओम को पकड़ कर स्वासों में सिमरन करो।
अज्ञान पर नज़र रखो कि ये दे॰ अ काहे का?

तू मैं काहे की? एक सत्संग अन्दर का है एक बाहर
का। अन्दर का जो सत्संग है अपने काम क्रोध लोभ मोह
अहं को देखना। क्रोध मन पर करें, लोभ रखे ज्ञान
का सत्संग का, मोह रखें आ॰ से, अहंकार किस चीज़
का करें सब तो श्र॰ की अमानत है।

ओम तत ~~सत~~ सत माता ओम के तत्व essence में
जाएंगे तो सत हो जाएगा वो मैं हुं तीनों एक ही है।
ओम तत सत हो जाए।

ओम जो अक्षर है वो महान अक्षर है और main
(परम) अक्षर है। जहां तहां ओम ही चलता रहता है।
जभी आप शान्त है तो आप देखेंगे पौधे से भी ओम
आता है। पक्षी से भी ओम आता है पानी से भी
ओम झरने में भी ओम, गंगा माता से भी ओम
ही ओम सुनो। ट्रेन चले तो भी ओम सुनो।

सब भ० की आवाज़ आती है नदी से पहाड़ से।

अनन्त रूपों में उसकी आवाज़ सुनाई देती है। GOD's voice is heard in many ways. जो शुद्धमन वाला है वो reality में ओम में रहता है। शुद्धमन वाला क्या है जिसकी ओम में वृत्ति चढ़ी रहती है।

ओम

28.3.93 ॐ Sun Morn

प्रेमी - अभी लगता है पता नहीं कैसे चलते है कौन सी शक्ति चलाती है?

भ० - मैं देखते है ज्ञानस्वरूप कितना काम करता है नहीं तो आदमी तेल में पानी और पानी में तेल डाल दे। पर ज्ञान स्वरूप इतनी तीखा है जो सब पहले ही बता देता है। अगर Body करने वाली होती तो पागलपन आ जाए फिर उल्टे सीधे कर्म करके पछताना भी है याद है न मैंने ये किया वो किया doer बनके करते है तो याद रहता है। चित्र गुप्त बताता है कि तुमने चोरी किया जितने कर्त्ता होंगे उतना लेख लिखेगा पर किसका कितना doer पता गया है इतना हमें अपने को मारना पड़ता है कि तुम्हारी इधर जरूरत है जो बोला या किया फिर जहां २ सीस निकले वहां २ अपने को deny करो कि (ये भी होगा) २ ये भी नहीं बकेंगे। इतना छुट्टा

दो अपने को कि तुम्हारी एक भी नहीं चलेगी, चलाते है तो उसमें तुम ही धोखा खायेंगे। ego से बोलेंगे तो result ठीक नहीं निकलेगी या दिखाने के लिए अच्छा कर्म किया, किसको पकड़ने के लिये अच्छा किया ये है मनुष्य की चतुराई। तुम बताओ चतुराई करते है या नहीं। मैं सत्य सरलता से खाली रहेंगे तो न मैं ठगे जायेंगे न तुमको ठगेंगे।

प्रेमी - अतिसूक्ष्म कारण शरीर को खोलिए

भ॰ - क्या है मनुष्य की बुद्धि, मन जहां काम नहीं करतें है वहां अतिसूक्ष्म है तो इतना जभी माया से बुद्धि निकाले तभी अतिसूक्ष्म को जानो। इस बीच में और को देखो भी नहीं ताकि अतिसूक्ष्म को जाने। जवाहरी की थोड़ी दृष्टि खिसके तो उसे कोई झूठा हीरा पकड़ा के जायेगा। ऐसे ही कई लोग जवाहरी को ठग के जाते है झूठा हीरा देके जाते है। ऐसे ही हमारा भी आत्मधन कोई भी मीठी बात करके लेके न जाए। ये संसार बाहर से मीठा है समझ जाओ जो भी मीठ बात करेगा वो मेरे को ठग लेगा। जो तीखा बात करेगा वो सीधा चलेगा हमको मीठा नहीं होना चाहिए कड़वा होना पड़ता है।

सत्त दर्शन जाइए साथ न लीजे कोई। किसी का साथ लिया तो भी गया काम से।

प्रेमी - भ॰ सूक्ष्म को खोला अभी कारण को और खोलिए।

भ॰ - कारण शरीर जो है माना total मेरे में अज्ञान न होवे जो हमको कुछ भी भासे। देह से ही बोलना कि भासे नहीं पर हम देखते है कैसे नि॰ चलाता है, कैसे पहुंचा देता है ऐसे ही मेरे को किसी कर्म का पता ही न पड़े, नींद का भी पता न पड़े, खाने का

भी पता न पड़े, ऐसे मैं अचरज से देखूं तुम्हारी style भी ऐसे होवे जो मैं तुमको अचरज से देखे। कोई भी तुमको अचरज से देखे आश्चर्य बन आ० है तो अचरज देखा अचरज सुनया -- । ज्ञानी रहता ज्ञान में आता नहीं देह अभिमान में । देह अभिमान ही खराब है जो हम किसी से भी बन के बैठें। जभी इस देह को भुलाया तभी सबको भलाई में रहते हैं।

हमको सिवाय गुरू के और किसको भी परीक्षा नहीं देनी है। गुरू चलाए तो चलेंगे बाकी किसके भी order में चलेंगे तो वो सत्यानाश कर देगा आपस में कोई किसको गलती भी न बताए तुम बोलो मेरा गुरू गलती बताएगा। सबको मोचड़ा लगाओ कि तुम आत्मा है जो हमको चलाएंगे। देह में बकते हैं power होना चाहिए। तुम power से नहीं चलाएंगे तो ढीले पड़ते हैं।

ओम

24·3·93 ॐ 10 am

प्रेमी- अपने को मिटाएगा तो प्रारब्ध नहीं भावी नहीं दूसरे को मिटाएगा तो प्रारब्ध भावी बनेगी?

म०- अपने को मिटाना है तो जैसे प्रारब्ध है ही नहीं। प्रारब्ध है शरीर का मैंने अपने को मिटा दिया तो प्रारब्ध भोगने वाला कौन रहेगा। जो हालत आती है pass away होगी। हम दृष्टा साक्षी है। मैं बनू नहीं तो हालत कैसे आएगी? हम दृष्टा है साक्षी है पर भोगने वाले हम नहीं है। कोई भी हालत इस शरीर पर ऐसे आयेगी जैसे बस लहर चल रही है। हम गुरू के ज्ञान में बैठेंगे ज्ञान हमारा साथी है। तुम बनाओ दुनिया में और कोई साथी है? ज्ञान ही साथी है। ज्ञान ही काजल है, ज्ञान नाव है, ज्ञान प्रेम समता है। हम नि० के ज्ञान में बैठे है सत का ज्ञान है। एक line आती है "सत उपदेश करे स्नान" तो माया की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। एक है

slave और एक है slow तुम गुलाम है ढीले है। तुम ढीले बात करते हैं हम तुम्हारी बात नहीं सुनते हैं।

प्रेमी - सूक्ष्म मे मोह कैसे जाए?

म० - तुम्हारा बेटा तुम्हारे से गलत चले तो तुमको मोह होगा? उस time प्यार करेगा क्या? तुम्हारे से सवाल जवाब करे तो उस time तुम क्या करेंगे? तुम उस पर क्यो आधार रखते हैं? तुम बोलते हैं ये बड़ा होगा मेरे को rest मिलेगी पर rest तुमको शमशान में ही मिलेगी। बाप कभी rest नहीं कर सकेगा, दुनिया मे कोई सुख भी नहीं रह सकता। ज्ञान तुम्हारा birth right है। आनन्द और शान्ति तुम्हारा जन्म का हक है। जो श्रद्धा ~~श्रद्धा~~ रखता है वो अपना हक लेके जाता है। बाकी मैंने तो कुछ भी नहीं किया है।

प्रश्न - बेअन्त का अन्त कैसे पाए?

म० - बेअन्त का अन्त है बीज मे देखो कि बीज भी म० का ही है। knower सुजाग है और आगे क्या करना है वह जानता है। knower २५ घंटा सुजाग है तो तुम किसी भी देह से कर्म नहीं कर सकेंगे। मेरा knower सुजाग है तो मेरा knower गलत कर्म करने ही नहीं देता है।

प्रेमी - आप [8] कमरे के अन्दर भी दादा म० का आवाज कैसे सुनते थे?

म० - जिसका मन किधर भी नहीं है तो गुरु का ही आवाज सुनेगा बाकी नहीं। मैं गुरु का ही आवाज सुनेगा और किसी का भी आवाज नहीं सुन पाएगा। गुरु के आवाज से भरपूर होगा बाकी नहीं। ज्ञान को ही सच्चा साथी बनाओ, ज्ञान वो अन्दर निकलेगा जो प्रेम से अन्दर से चलते है। भूला रस

इन्द्रियां ले नहीं सकती है। जो ज्ञानी है मौन करे शान्त करे। विचार का शब्द बोलेगा, किसको discourage नहीं करेगा encourage करेगा। क्यों हम किसको discou-rage करे? मैं भ० हु तो मेरा ख्याल मेरे बस मे होवे। ओम में वृत्ति रखे ऐसी जो कोई ख्याल ही नहीं आए। मेरे को बुरा ख्याल आया तो इधर आना भी बेकार है। ओम में वृत्ति है तो ख्याल मेरे बस में है। ज्ञानी हमेशा कभी भी स्वार्थ नहीं करेगा और किसकी भी भलाई उससे होवे बुराई नहीं। बुरा न बोलो, बोलने से भी कर्म करता है ये तुमको भी मालूम नहीं पड़ता। ज्ञान से तो हमको पहले वाले कर्म मिटाने है तो और नए कर्म कैसे बनाएं?

प्रेमी - भ० फिर २ पटरी से उतर जाते है?

भ० - उतर जाते है तो try again २। फिर २ अपनी कृपा करो जिसका मन किधर भी नहीं है तो खाली गुरु की ~~भर्ती~~ ही आवाज सुनेगा और कोई बात नहीं सुनेगा। गुरु की वाणी से भरपूर बाकी सब खाली। ज्ञान को सच्चा साथी बताओ वो सच्चा साथी तुम्हारे अन्दर से निकले। तुम ऐसी अपनी point लिखो कि ये कैसे ज्ञान से हो गया जो अब इन्द्रीयां का झूठा रस नहीं लेगी। अपने को मिटाते चलो अहं भी तंग नहीं करेगा दूसरे को कसूर सपने में भी नहीं देना।

ओम

21·3·93 morn

ॐ

"आज मैं सागर न होवे तो तुमको कैसे सागर बनाए"

प्रेमी - भ० व्यवहार में चलते हुए कोई भूल न होवे उसके लिए युक्ति बताइए।

भ० - एक ही युक्ति है कि हमको doer नहीं होना है दूसरे को आगे करके अपने को पीछे करो। तुम देखो किसने दूसरे को आगे किया है। तुम देखो बहु को कितना हक है सास को कितना हक है हमको art होगा तो उसको आगे करेंगे खुद पीछे हो जाएंगे। हमेशा मैं ज्ञानी हुं तो मेरे को पूछने का art होवे कि मैं किसी तरह दूसरे को आगे करके मैं निकल जाए।

प्रेमी - भ० ओहम, सोहम, शिवोहम, तत्वमसी सब एक ही meaning है।

भ० - तुम सवाल तो बड़े पूछते है पर चलते एक नहीं है। सत्य सरलता में तुम नहीं है। सत्य सरलता मेरा गुण होवे। जो सत्य सरलता में नहीं है वो चोर बदमाश है, दम्भी पाखण्डी है। तुमको खाली दिल है सत्संग करने की, योगीयों को अपने पास रखने की पर मैं बोलते है मैंने हीरा दिया अभी भले 40 जने को दिखा के आओ। तुम तो अपने 2 शहर में 2 जने भी नहीं बन सकते है। ओहम सोहम शिवोहम सब मैं हुं पर तुम कौन से वचन पर चलते है। गुरु के सामने आहम सोहम विश्वास करके जानो तो कोई और शब्द भी नहीं है ओहम भी मैं हुं, सोहम भी मैं हुं। शिवोहम जो सारा जगत की प्रलय करके बैठा है। वो हमको अपना art है। वो ज्ञानी मूर्ख है जो समझता नहीं है कि कहा शब्द की जरुरत है वहां बोले। तुम सब मूर्ख है। तुमको कोई भी कुछ भी सिखाता है। हमारे को life में

मेरे को मेरे गुरू के सिवाय एक शब्द बोले तो मैं सीस काट देवें मेरा सबका एलान था कि मैं तुम्हारे से एक शब्द भी नहीं सुनेंगे सब थोड़ी मेरे गुरु बनेंगे। इससे तुम्हारा मगज ही खलास हो जाएगा, यथाशक्ति खत्म हो जाएगी। मैं तुमको देखते है, तुम्हारा पति भी नाराज बेटा भी नाराज। तुम्हारे घर मे सब अतृप्त है, मेरे पास सब लड़कियां full है मैं किसको भी अतृप्त नहीं रखते है। मेरे जाता क्या है जो मैं अतृप्त रखें?

ओम

Knower

आज मेरे अन्दर में आया एक एक आदमी seer बने knower को जाने उस तक ही पहुंचना है। ये ही जगह है जहां seer और knower को जान सकते है। सब जगह तो मेला है। यथार एकान्त है मैं कहती हु मेरी बात सुनो। तुम knower को नहीं जानेगा तो दुख भी नहीं जाएगा, हालत भी नहीं जाएगी, दे० ह्य भी नहीं जाएगा अज्ञान भी नहीं जाएगा, कृष्ण भी नहीं जाएगा। ये ~~पहलवान~~ पहलवान seer बैठा है अहंकार से तुमने उसको ढक लिया है। अहं को डालो जूती में, knower को ऐसा ऊपर करो ego को पानी मे डालो। या ego का राज्य रहेगा या knower का। one time में one राजा राज्य करेगा। इस जगह को useful समझो तो knower को जान सकते है। घर में बाबी की घंटा होगी टेलीफोन की घंटी बजेगी। तू भी knower को

पकड़ेगा तो प्रकृति automatic चलेगी। जुबान की चुप है तो तुम्हारा knower जागेगा फिर आगे वाले को भी सुजागी आयेगी उसका knower जागेगा कि ये चुप है तो मैं इससे गलत बात नहीं करूं। प्रकृति तुम्हारे इशारे में automatic चलेगी यदि तू knower को पकड़ेगा। जैसे नि० का बाहर की प्रकृति मे इशारा चलता है धूप होती है वर्षा होती है, जमीन चल रही है आसमान चल रहा है इसी तरह से तू knower को पकड़ेगा तो घर की प्रकृति तेरे इशारे पर चलेगी। तुम मूर्ख है क्या, knower को सुजाग रखो तो वो सब बताता है तुमने गलत कर्म क्यों किया, लोभ क्यों किया मोह क्यों किया पर हम सुनते नहीं है। तुमने गुरू को भी नहीं सुना है knower को क्या सुनेगा? उसको avoid करके चलते हैं।

knower बहुत सुजाग है। साक्षी को देखो तो पता पड़े कि तुमको रात को बैचेन करता है या नहीं? तुम बेटे बेटी के मोह मे लय हो जाते है तो तुमको साक्षी का पता ही नहीं चलता है। knower आइना है सुजागी है। देखो कितना ये हाथ काम करता है तो उंगली को रोशनी कौन देता है कि ये गर्म है इसमें संभाल के हाथ डालो। पर ये अहंकारी जीव सुनता ही नहीं है। इतना कुत्ता कुत्तापन करता है जो knower को जागने ही नहीं देता है। सारा दिन अहं से चलते है। अहं को ही साक्षी बना दिया है। पर ज्ञान स्वरुप इतना तीखा है जो पहले ही सब बता देता है।

ज्ञान स्वरूप को पकड़ कर पीछे संसार मे जाना कि सत्य क्या असत्य क्या। मैं नहीं बोलते हैं

दुनियां छोड़ो पर अनुभव करो। Time waste

मत करो knower को पकड़ के चलो। seer पता

लो, doer पता छोड़ो। चोले को छोड़ो। मैं seer,

knower, all knower सब हूं पर इस चोले को छोड़ो।

तुम्हारा ज्ञान स्वरूप कितना time सुजाग होता है

जो तुम्हारे से कर्म कराए जो तुमको चलाए। किस

time तुम्हारा ज्ञाण स्वरूप सोता है? ज्ञाणस्वरूप

बोलता है इतना खाओ इतना चलो पर तुम table

पर बैठेंगे जो आएगा खा लेंगे stop नहीं करते।

तुम पकड़ो कहां २ भूल होती है, कहीं मनोरंजन

किया तो उतना time waste, मेरा ज्ञानस्वरूप छक

गया, तुम ये नहीं कहते कि इस रथ में स्वामी

बैठकर बोलता है, मैं अच्छा बुरा करने वाला

कौन? तुम मां चाची बनते हैं इसमें तुम्हारा

ज्ञाण स्वरूप खत्म हो जाता है। बहुत पकड़ना है सत्य को,

अपनी तो एक भी नहीं चलानी है। हम जो तुमको

ज्ञाणस्वरूप पकड़ाते हैं उसको पकड़ते ही चलो। पानी को

जैसे फिटकरी लगाते हैं तो मिट्टी नीचे बैठ जाती है

अपने को भी ज्ञान की फिटकरी लगाओ।

ओम

1st April Evening

ॐ ज्ञान सहित वाणी पर control

जब दे० अ है और जीव भाव है तो वाणी पर control टके का भी नहीं होगा। अच्छी बात होवे या बुरी बात चाहे कितनी भी साधना करो जोरी से दबाएंगे तो नहीं दबेगा जैसे spring को दबाएंगे छोड़ेंगे तो और ऊंचा उठेगा ऐसे ही जीवभाव वाले पर कोई विश्वास नहीं है कि वो mystery रख सकता है। जीव सृष्टि चमार दृष्टि जभी वो जीवभाव छोड़ेगा तो आपे ही उसका शब्द विचार से निकलेगा पर दे० अ० में तू कभी भी perfect नहीं होगा जो तुम्हारे ऊपर कोई विश्वास रखे। जरूर तू कुछ न कुछ बोलेगा मेरे से किसी न किसी के दिल में अशान्ति आयेगी क्यूंकि ज्ञान सहित तुम्हारी वाणी नहीं है control नहीं है तो किसको शान्ति नहीं मिलेगी। कोई भी इन्द्री बस नहीं होती है दे० अ में तभी शास्त्र में लिखते हैं शम

दम इन्द्री को रोकना, मन को रोकना। इसमें भी दे० अ पक्का है कि मन ये सुख न ले, ये न स्वाद और इन्द्री को जोरी से दमन करेंगे तो अन्दर जाकर नासूर होगा। अगर रोकेंगे तो जैसे आकाश को तुमने काटा। आकाश को आग लगाई। अगर जोरी से मन इन्द्री को दमन किया तुम्हारे अन्दर ख्याल पैदा होता है अगर तू आ० है तो ख्याल किसके लिए होवे, किसके लिए मेरा सं है। मेरे पास तुम जभी कोई भी सं डालेंगे तो return में सं होगा पर मेरे पास अपना कोई सं नहीं है।

दे० अ० पर मेरा कैसे विश्वास होगा कि ये mystery रखेंगे। हम रोकेंगे किसको भी तो वह वह जाएगा। हमारे अन्दर कौन सा store है जो हम किसकी भी बात अन्दर रखे पर हम सुनते हुए नहीं सुनते है, बोलते हुए नहीं बोलते है कोई

भी मेरे पास न action है न reaction है।

तुम भी बीमार करेंगे किसको जो बात करके बोलेंगे कि ये बात किसको नहीं बताना। इतने जो murder होते हैं वो कैसे होते हैं? किसके भी आगे हम गन्दी बात कर देंगे और फिर उनको रोकेंगे तो वो ही murder करके चला जायेगा। तुम्हारे अन्दर टके का भी control नहीं है। मेरे को बताओ तुम बोलते रहते हो या नहीं?

हमने ऐसा खेल रखा है अपने घर में जो सारे दिन में किसी से बात होती नहीं है। हम किसी से बात ही नहीं करते हैं क्या सुनाए क्या कहें कोई दूसरा ही नहीं है जो बात करे। तुम्हारे लिए तो है न दूसरा। तुम नींद में भी दूसरा ही बकेंगे। तुम doer है। सपना भी

तुमको आयेगा क्यूंकि तुम doer है। तुम्हारा कोई योगी तुम्हारे से नहीं तरेगा क्यूंकि जो तुम उनसे बात करते हैं तो उनको खाली नहीं करते हैं नहीं तो तुम बताओ कि तुम क्या बात करते हैं, तुम किसको खाली नहीं करते हैं। कोई भी तुम्हारी act right नहीं है। हम तुमको रोज खाली करते हैं पर तुम तो किसी को भी शब्द देके बीमार करते हैं। सारा दिन दे० अ० में चलते हैं इसलिए दे० अ० खराब है तुम doer है। तुम चोरी से दमन करते हैं अभी तक तुम्हारे अन्दर कोई न कोई बात रह गई है क्यूंकि मन पापी नीचे है गुरू से छिपाने की करता है। तू पापी है, निन्दक है, चोर है जैसे चोर का कपड़ा उतार कर नंगा किया जाए ऐसे तू मन को नंगा नहीं करेगा सच नहीं बोलेगा। अच्छा अगर तुमने मन को रोका भी

तो तुमको उससे क्या मिलेगा और गुरू को बनासंगे तो क्या मिलेगा ? हम चोर की बात कैसे बताते है चोर को कितना नंगा करते है कितना पुलिसवाले के आगे करते है और तुम कितना नीच पापी है। दे०अ है जो मन को नंगा नहीं करते है तो मन कैसे वश होगा, आ० में तृप्त रहे तो बात कौन सी करे और दूसरा भी तुम्हारे से advantage जरूर लेगा। दे०अ से दे०अ मिलेगा मेरे को तो कोई भी दे०अ नहीं मिलता है मैं अकेला ही हुं। तुम हैरान होते है न कि भ० एक ही शब्द में किसको भी कैसे खाली करते है। तो मेरा शब्द कैसा है और तुम्हारा शब्द कैसा है। चाहे तू same वाणी बोल किसी को भी। बीमारी भी आती है पर ये कई लोगों को मालुम नहीं है कि मेरे को बीमारी क्यूं है। एक cancer

के कीड़े से हजार कीड़ा बनता है तो एक भी ख्याल कोई छिपाके बात करता है तो उसका उपदेश किसको भी क्या लगेगा।

ओम

2.4.93 Friday 7p.m. ॐ

प्रेमी - भ० मन को अमन कैसे करें जो दमन नहीं करें ?

भ० - दमन करना रोकना तो फोड़ा हो जाएगा। बाहर से फोड़ा होगा दबाएगा तो नासूर हो जाएगा। जैसे कोई ऊपर से दवा करता है। जैसे कमरे में मच्छर पड़ा है तो पहले treatment करनी है। हमको ज्ञान बहुत प्रिय लगे। जैसे खाते है तो भी novel पढ़ते है, झाड़ू लगाते है तो भी novel पढ़ते है ऐसे ही ज्ञान का भी इतना ही शौक होवे। तो ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान। उठते बैठते सोवत जागत -। पहले ये लोग इधर उधर भटकते थे। अभी इधर रस रखा है तो कुछ

तो पल्ले पड़ेगा न। जैसे एक चिनगारी लगी factory में झंझट होगा। ऐसे ज्ञान में आदमी कभी भी सुख से नहीं सो सकेगा। तकिए के नीचे भी गीता रखेंगे। पहले ज्ञान का इतना रस कभी लिया है? इतना शौक था ज्ञान का किसी को भी पहले? अन बैठत यही चिन्ता यही विचार। कोई भी साधु इतना रस नहीं लेते उनको खाली त्याग है। किसी के पास ज्ञान की कोई बात नहीं है, विचार चिन्तन नहीं है। ओम का अर्थ क्या है, सतगुरु का अर्थ क्या है? किसी को भी असल meaning का मालूम नहीं है, foundation का पता ही नहीं है।

मन को रोके तो कैसे रोके वो भी तो साधन होवे न। मन को क्यों न समझाए कि जो मैं पहले था वो मैं अभी नहीं हूं। मैंने शुरूमुख से नया जन्म लिया है ऐसे तू मन को पुरी बात सुना कि अभी मैं वो नहीं हूं तो मन जैसे मेरे पांव पड़े कि तू जैसे चला। तो मन जैसे ज्ञान से अमन होगा कि अभी मैं इच्छा करूं तो कौन सी, ख्याल करूं तो कौन सा। सब कुछ तो प्राप्त है पर personal किसी को अपना बनाया तो जैसे उसे कैद कर दिया। one से हमने दो क्यों शुरू किया? किसको क्यों फसाए जिसमें मैं भी फसूं और उसकी हंसी भी बन्द हो जाएगी। तो पहले मक्खी किनारे से शहद खाती है फिर लोभ में बीच में आकर मर जाती है। ऐसे ही मनुष्य दुनियां में किनारे से रस लेता है फिर लोभ में जाके मरता है। कुदरत है ही ऐसी जो लोभ होता ही है खाने में पीने। पैसा कमाएंगे, पैसा कमाना आसान है संभालना मुश्किल

है । मेरा मेरा करके मर जाते हैं। हम अमानत में खयानत करके मर जाते हैं । अभी मन जाए तो किधर जाए। सब मिथ्या हो गया।

ओम

3.4.93 Evening

प्रेमी - भ० निर्वासनिक समाधि को खोलिए

भ० - ये जो दुनियां में समाधि करते हैं तो प्राणायाम से समाधि करते हैं । स्वासों को रोकना चढ़ाना वो तो देह की समाधि हो गई पर जो निर्वासना है वो ये है कि कहां भी मेरा मन नहीं है। देह की समाधि में प्राणों को ऊपर नीचे करना पड़ता है पर वासनायाम है जो मेरा मन कहां भी वास न लेवे कहां भी वासना न जाए ये हो गई सहज समाधि । किसी से भी मेरा मन वास लेता है, जिसको देख के खुश होते हैं किसी से मेरा लगाव है वो आयेगा तो मैं खुश होते हैं और नहीं आयेगा तो आँखे उसको ढूंढती रहेंगी । समझो एक कोई है जिसमें मेरा मन है वो आयेगा तो मैं खुश हो जाएंगे तो मैं उनसे वास लेते हैं और वो मेरे से । समझो अभी एक ही आ० है तो मेरा मन किसी में भी क्यों जाए? तुम समझो A से बात करते हैं B से नहीं तो क्यों ? मैं बोलते हैं ज्ञान से मन को अमन करो बाकी विचार क्यों देवे ? जिससे मेरी बात है वह आयेगा और मैं बक बक शुरू कर देंगे क्यूंकि मेरा लगाव है। मेरी वासना उसमें है कि वो आयेगा तो मैं बात करेंगे तो मैंने लगाव रखा है तो उल्टी चाहने वाली भी आती है और तुम उल्टी देने वाली भी होती है । उल्टी आती क्यों है? हम गन्द खाते हैं तो उल्टी होगी । तो ये हम उल्टी रखते क्यों हैं ? ज्ञान से मेरा मन अमन हो जाए। ज्यादा से ज्यादा शुरू

भोग है पर हम बाहर का संग करें क्यों जो मेरे
अन्दर ख्यालों की गठरी बने? प्रिय, अप्रिय है कुछ भी
है तो मैं जिज्ञासु नहीं हूं। प्रिय अप्रिय क्यों लगे जभी
सब ठीक ही है सब एक ही है। इतना मेरा लगाव है कि
सब ठीक ही है पर मैं किसी से भी बक² करते हैं
क्यूंकि मेरा भरता है तो मैं खाली होते हैं पर कौन
सी ऐसी बात है जो मैं इसको दूं या उसको दूं।
तुम गुरु को प्यार करेंगे तो भी उसको दिखा के करेंगे।
वो जाके उसको copy करेगा तो मेरी mystery क्या रही?
मेरा प्यार है गुरु से मैं करूं या न करूं पर किसको भी
मेरा भी मालूम क्यों पड़े। चोर जैसे। चोर भी
इतना न छिपाए जितना हम छिपाएंगे तभी तो हम
सागर बनेंगे नहीं तो नाला और नदी बनेंगे केवल
वैखरी वाणी बोलते रहेंगे। तुम सागर तो होने वाले

नहीं है तुमको ये नहीं है कि मैं कैसे एकरस रहूं
शान्त रहूं तो नहीं है तुम्हारे में। तुमको शौक ही नहीं है
कि मैं ऐसे सागर बनूं ऐसी वाणी निकले जो सबको तृप्त.
और शान्त करूं। खुद भी शान्त रहूं। मेरे को किसी की
भी जरूरत क्यों पड़ती है कि वो आयेगा तो मैं खुश
होगी। तुम बोलते हैं मेरी वो बात सुनती है तो तू
ज्ञानी कहां है जो तुम्हारे अन्दर बात है। ज्ञानी तो हलवा
खाके डोना फेंक देता है। ज्ञानी जो बात है वो फेंक देवे
या रख देवे। तुम खाली क्यों नहीं होते हैं जो
बक² करते रहते हैं। अन्दर में निश्चय आत्मिक बुद्धि
देवे हमारे जो जो सामने बात आयेगी उसी time उसको
सामने ही बोल देंगे गाली भी देनी होगी तो दो
मिनट में गाली देके खाली हो जाएंगे। तुम
तो जो सेवा भी करेंगे तो हाथ बटा के करेंगे हम

तो अकेले ही करेंगे। हम कहेंगे मेरे से जो होगा वो ठीक है अचानक कोई सामने आ गया तो मैं रोकेंगे भी नहीं और फिर बोलेंगे भी नहीं। हम A और B नहीं कहेंगे किसको इशारा भी नहीं देंगे कि तुम ये करना तुम जाना। अन्दर memory को तो याद रहेगा कि हमने इसको बोला और वो भाई भी कहेगी भ० ने बोला। तो हम ये काम करते ही नहीं है। तुम सारा दिन देखो तुम्हारा बाहर रस पड़ा है तो तुम अन्दर का अपना रस कब लेंगे? तुमको खातरी कैसे होगी कि मेरे को अपना रस है अपना ज्ञान है। तुमको पता नहीं मिलना क्या है इस उससे। मेरे को पसन्द है तो सब पसन्द है बाकी A B नहीं। मेरे को जरूरत ही नहीं है किसी को मिलने की या देखने की। संगत में देखता है समाचार बाबा सारा

तेरा ही है ख्याल बाबा। सब तेरा ख्याल ही है तुम कमजोर है कमजोर ही रहेंगे। कभी नहीं strong होंगे अगर किसी को इशारा भी देते है। मेरे लिए तो सारी दुनिया है पर मैं टके का इशारा नहीं दे सकते है। मेरे को allow ही नहीं है। कोई आता है तो बात नहीं है जाता है तो भी बात नहीं है। ये जो इतना सत्संग का ~~सेवार~~ सागर बना है कैसे बना? पहले गुरु का इशारा समझ में नहीं आता है। मैं एक को भी personal चिट्ठी नहीं लिखते थे। ये सब उसका फल है जो कहां रुकेंगे नहीं कहां बातचीत नहीं बस चलते चलो २, सेवा करते आओ २ पर personal use नहीं है। उसमें अपनी भी जिन्दगी खराब दूसरे की भी खराब और तुम कभी भी सागर नहीं बनेंगे।

ओम

6.4.93 morn

ॐ

प्रेमी - प्र० अभी किसी भी कर्म में मन नहीं लगता है केवल ज्ञान में मन लगता है।

प्र० - कर्म तुम कौन सा करेंगे? तुमको वक्त है पर समझ नहीं है कि कौन सा कर्म है। तुम्हारे ऊपर कौन सी गुलामी है कौन सी जवाबदारी है? दुनियां में सब बोलते हैं हमको duty करनी है कर्म करना है। प्र० का संग सिखाता है कि हमारे total कर्म खलास हो गए। अभी कौन सा कर्म जरूरी है जो duty थी या फर्ज था या जरूरी करना है तो जो हमारे हैं वो सब कर रहे हैं। हमारे ऊपर कोई जवाबदारी नहीं है तुम सब अपने से पूछो तुम जो इधर बैठे हैं तुम्हारी सब जवाबदारी कैसे छूट गई। किसके भाव से तो छूटी है न। तुम्हारा पुरुषार्थ है तुम इधर बैठे है तो और सब माया पीछे हो गई है। तुम सोचो मेरी newlife है।

New life New light तुम शुरू को आगे रखेंगे तो तुम्हारे को same कोई नहीं कहेगा पर तू जीवभाव में रहेंगे तो वो बोलेंगे हमको नौकर तो चाहिए duty करते रहो तुम। तो ऐसी ही duty में beauty चली जायेगी। जैसे तुम दुनियां में change करने जाओ तो फिर भी रोकेंगे अभी तुम्हारे ऊपर कोई फर्ज duty नहीं रही तभी कैसे तुमको एक दिन यहां free आने मिलता है। पर जो मैं तुमको हाथ में पकड़ के life देते हैं उस life को ruin नहीं करना। कुछ भी नहीं चाहिए अगर चाहिए तो life ruin हो जायगी। माया life को खराब करती है जो भी आँख से दिखता है वो माया ही है। माया time से ज्यादा life को ruin कर देती है। इधर तुम रहे पड़े है दो महिने से तो 2, 4 कपड़े में काम चल रहा है न। थोड़े पैसे में भी काम चलता है life चलती

है सारी जिन्दगी चल सकती है बाकी इतनी जो तुम्हारी घर मे माया है वो कहां करेंगे हमको चाहिए क्या जो beauty गवाए और गुरु की मेहनत खराब न करे। हम गुरु के भाव में चले तो हमारी life ही life है पर तुम ही गड़बड़ मे है तो कैसे चलेंगे। हमको मनोरंजन नहीं चाहिए तो हम छूटे पड़े है पर तुम खुद ही ऐसे करते है। इधर से जाते है तो अपने को free कर देते है। घर में जाके फिर तुम पुछेंगे कि मेरे पीछे कैसे रहे तो इतना भी नहीं बोलना है पर न्यारा होके रहना है, बात नहीं करना। अपने को बोलो गुरु का लगाम अन्दर में है तो हम free कहां है। मतलब अपना आदर्श हमको रखना है। एक रूप में बोलेगा तुम करो दूसरे रूप में बोलेगा इससे नहीं होगा इसको छोड़ो तो हम free free है। ये गुरु तुम्हारी life बना के देता है तो निष्काम कर्म भी आपे ही सामने आयेगा।

प्रेमी - भ० एक तरफ कहते है गुरु को बीच मे डालना है दूसरी तरफ कहते है। गुरु को कर्ता नहीं बनाना है।

भ० - तुम अपने को बोलो कि मेरे को गुरु की मना है दूसरे को नहीं बोलना पर जहां कोई मिठाई या gift लाया है वहां बोलो गुरु की मना है व्यवहार की मना है पर main बात मे नहीं बोलो। जहां हम present देते है वो भी मेरे को देते है तो हमको अच्छा नहीं लगता है। जो हमारे लिए सोचें मैं उनके लिए सोचूं तो time चला जाता है इसलिए सब निमित्त मात्र होवे।

प्रेमी - भ० बात ध्यान जप भी है पर पूरी आनन्द की स्थिति नहीं है।

भ० - ये गलत बात है। ज्ञान ध्यान है तो पदवी
दूर नहीं है। तुम्हारी कोई न कोई फल की इच्छा
है कि मैंने इतना ज्ञान सुना है पर आनन्द नहीं
आ रहा है। ये भी इच्छा है। तुमको मालूम ही
नहीं है कि आनन्द क्या होता है। आनन्द माना तृप्ति
मन की तृप्ति जो कुछ भी चाहिए ही नहीं। कोई
इच्छा नहीं है जो कुछ देखें तो मन जाए fullness
है कुछ चाहिए ही नहीं। रंज भी नहीं है खुशी भी
नहीं है दिमाग खाली है। जहां खुशी रंज है तो आनन्द
नहीं है। तृप्ति र है जो कोई hope ही नहीं है जो
कुछ मिले तो खुशी होवे, न मिले तो रंज होवे।
कुछ चाहिए ही नहीं कोई देता भी है तो लगता है
कहां रखें। हमको अपनी routine यहां ही बनानी है
ध्यान की। एकान्त में बैठ के संसार परिवार

में कैसे चलना है फिर मन को बोल सकते है न कि
उधर कैसे चला। तो इधर practice जरूरी है। कभी भी
मन खट्टा हो जाए किसी बात से तो यहां एकान्त में
आकार बैठ जाओ। जब घर में आग लगे मालूम है
हालत आने वाली है तो दो चार दिन पहले ही गुम हो
जाओ। जो सोवभाव वाले रहना ~~चाहिए~~ चाहते हैं भले
रहें। ज्ञानी आग जाता है उसको पहले ही मालूम पड़
जाता है। संसारी आग बहुत खराब है कर्म नहीं बनाना है।
प्रेमी - भ० आनन्द की meaning आज ही समझ में आई।
भ० - आनन्द कोई अमृत थोड़े ही है। शहद की कोई
लार थोड़ी है जो ऊपर से टपकेगी? तृप्ति तृप्ति है
जहां कोई इच्छा नहीं है। जब तू ही नहीं है तो
ब्रह्मपद पर कौन पहुंचेगा आज से ये भ्रम निकाल देना
कि तुमको ~~कोई~~ कहीं पहुंचाना है। तू ही नहीं तो ~~पहुंचे~~ पहुंचेगा
कौन?

ओम

6-4-93 Evening 'Thy Will' ॐ

प्रेमी - भ० ज्ञान में इतना तृप्त शान्त मौन देखते हैं फिर भी मृगतृष्णा के जल की तरह मन क्यूं दौड़ता है?

भ० क्यूंकि वातावरण तुमने अपना नहीं बनाया है। हमने देखो वातावरण बनाया है तो माया में जाना नहीं पड़ता है। कोई भी जिज्ञासु होवे तो वातावरण जरूर बनावे। जिज्ञासु होवे तो अपना आदर्श रखे पर अगर धक्का खाता है या और गुरू का दर्शन करने जाता है या अज्ञानियों के वातावरण में जाकर बैठता है तो इसमें वृत्ति नीचे आयेगी। मतलब क्या है इधर उधर जाने का अभी तो इतना भी लगता है कि जिज्ञासु की जरूरत है पर public के सत्संग की नहीं। जैसे जनक गया अष्टावक्र के पास, अर्जुन आया कृष्ण भ० के पास शुकदेव मुनि गए जनक के पास वहां ज्ञान सुन के उ० प्र करके ज्ञान निकाला। तो ज्ञान सुन के अगर वातावरण ठीक नहीं है तो वृत्ति right नहीं होगी या समझो हम निष्काम कर्म करें और उसमें भी हमारा ज्ञान सुनके आगे वाला गलत कर्म करे तो वो भी पाप तुम्हारे ऊपर है जो सुनाने वाला है। तुम्हारे ऊपर जवाबदारी है जैसे लड़की की शादी करते हैं तो अच्छा वर ढूंढते हैं ऐसे ही जिज्ञासु को भी देखेंगे कि लायक है या नहीं। इस ज्ञान में सत्संग में रस तो बहुत है बाहर से झांझ भी नहीं है ढोलक मंजीरा भी नहीं है पर जो रस एक वचन में आता है, एक भजन में आता है, प्रेम में आता है वह दुनिया में कहां भी नहीं है। T.V पर भजन बोलते पर रुखा सुखा। जो रस है जो प्रेम है वो कोई और बात है जो भ० के भाव और प्रेम में गाया जाता है।

प्रेमी - भ० emotion उठता है जभी इच्छा के विरुद्ध

कुछ भी होता है।

भ०- ज्ञानी तभी है जो ~~total~~ इच्छा करे तो सोचे कि पूरी हुई तो अभी फिर नहीं उठनी क्या? इच्छा पूरी करते हैं फिर उठती है तो अगर ज्ञानी है जिज्ञासु है तो ~~ईश्व~~ ईश्वर इच्छा पर चले कि मेरी डोरी तेरे हाथ। ऐसे नहीं कि भ० की डोरी मेरे हाथ। जब मेरी डोरी तेरे हाथ है तो उसको क्या कस लगेगी। जिसके अन्दर विश्वास ~~प्रभु~~ आयो - अगर हम बोलेंगे कि भ० मेरी डोर तेरे हाथ तुम किधर ले जाओ जिधर रखो जैसा भी करो। हम समझो अपनी नहीं चलाते हैं तो उसमें मेरे को क्या कस लगी है। मैंने will छोड़ी है तो बस मेरा खेल चल रहा है तुम सब देख रहे हैं। मैं अगर अपनी will चलाऊं तो कभी गिरूं कभी ~~ऊ~~ चढूं उसमें क्या मिलेगा।

तो क्यों न बेअन्त का अन्त देखे कि वह कैसे चलाता है, कैसे नाटक चलाता है कैसे खेल करता है। नि० इतना artist है बेअन्त का अन्त देखो कैसे उधर का उधर करता है, उधर का इधर करता है हम नि० का सारा खेल अपनी हाथ की तली पर देखते हैं। हमने जब से ज्ञान सुना है हमारी चाहना बन्द है तब से नि० का खेल देखा है कैसे नि० ने हमको चलाया है कैसे खेल किया है कैसे रखा है हमने तो कभी सोचा भी नहीं था हमको तो सबमें नि० ही दिखाई देता है। इस रूप में भी सांई उस रूप में भी सांई। इस रूप में कौन है उस रूप में भी कौन है। हम तो सबमें सांई देखते हैं उसमें भी सांई तेरे में भी सांई खराबी क्या है न रंज न खुशी है, सुख आता है न दुख। कोई अभी

बोले सामान खोलो या समान बांधो सब ठीक है। होगा क्या हम क्यो उलझन मे पड़ते है प्यास या न जाए। हकुमे अन्दर सब हर कोई --। अनजल होगा वहां प्रकृति चलेगी। दाना पानी नहीं होगा तो प्यार ही करेंगे। आदमी है क्या? तुम कैसे दो बुद्धि चलाते हैं? तुमको साई का डर है? अभी कोई है अभी नहीं है, सुबह कोई है शाम को नहीं कैसे तुम अपनी will चलाते है। हमको कोई will नहीं है क्या will करे will माना wish विष माना जहर।

तुमको आदत है पुरानी will चलाने की हमको। तो हर रूप मे नि० ही दिखता है तभी सब खेल देखते है कि ठीक है।

कभी भी दो बुद्धि नहीं रखो, दो will नहीं रखो। जभी मन मे लहर आए सें

आए तो चले जाओ बैठो ही नहीं जहां तो मेरा कमरा भरी हो जाएगा।

मैं देखते है आ० है, ज्ञान और अज्ञान है तो सब अपने ज्ञान से उठेंगे या मेरे से शैस करेंगे। आज हे मैंने पौधा लगाया। एक दो दिन लगाया, दूसरा दूसरे दिन तो वह अपने time से बढ़ेगा न। वैसे ही तुम्हारी जो वासना है जो अहं है जो निश्चय है उससे चलो। पर दूसरे से शैस नहीं करो किसी से रुकहे नहीं चलो। न रुकहे आए है न रुकहे जाएंगे तो शैस काहे की करे, सें कौन सा करे अपने निश्चय से उठो अपने निश्चय से चलो।

ओम

जो अपने दिल और दिमाग और वचन को
एक रस रखता है, वो ही पूर्ण समर्पण
कर सकता है।
नही तो सारा दिन सोचता रहता है. तो
ये करूँ ये नहीं करूँ ये करू ये नही
वो एक का भी ज्ञानी नहीं है. करे या
न करे तो करता हुआ
ज्ञानी किसी भी शब्द को meaning ingu-
निकालता है। और कोई भी शब्द बेकार
का नहीं बोलता है, कैसे हम बेकार की
बात करते है, कैसे बेकार की बात
सुनते फिर पछताते रहते है। वो
ज्ञानी नही है जो एक second
या एक minute भी अपना

व्यर्थ गवाये वो ज्ञानी नही है वो मूर्ख
है जो करके और पछताते। जिसके
भीतर भी सच है. उसके पास सच्ची
एकाग्रता है, सच्ची मौन है, सच्ची एक
रसता है. इसलिए पुरी कोशिश ये करे
कि हर हालत मैं [illegible] एकरस कैसे
रहु। मेरे अंदर कौन सा computer होवे
जो सच से सच ही निकले। [illegible] अंदर
बाहर एक रहेगा। अंदर एक बाहर दूसरी
नहीं करेगा

अंदर बाहर

मेरा कभी तीन काल में किसी से
भी connection नहीं हुआ
बाकी कोई भी plug डालता है

भिखारी थोड़ी है जो लेगे
उसको ligu- मिलती है
ligu- तो ligu- होती है - जिन को अपनी
ligu- नही है वो plug डालते है. वो main
power नहीं होते है. ये भी एक शौक
होवे hobby होवे. तो मैं ही
हो जाऊँ मेरे में और लोग plug डाले
जो भी गुरु के मुख से शब्द सुनता
है, वो ही main power हो सकता है
नही तो तुम्हारी कम बुद्धि है तो गुरु
यहां वहां मन रखके आत्मा की power
गवाते है अपनी कीमत कम करते हो
अपनी कीमत इतनी बढ़ाओ - जो दुनिया
कोई कीमत चुका न सके तो
main power को अभी क्या है,

Monday. 14th

– प्रेमी :- भगवान आपसे मिलके एक हो जाये?

भगवान :- तू और मैं हमेशा एक हूँ.

(भगवान और मैं एक हूँ) - तुम हम हैं, हम तुम हैं

~~भगवान~~ । ये नहीं बोलो भगवान से

एक जाये ~~[illegible]~~ कल होगे या परसों

नाउम्मेदी तू करता है । आदि सत

एक ही सत है आदि सत जुगादि सत

है, है भी सत । आदि से सत है. सृष्टि

थी नहीं तो सत (भगवान) था- सृष्टि है

तो भी भगवान है, सृष्टि की प्रलय हो

जायेगी भगवान रहेगा

तुमने भगवान को भुला दिया है । सत

का अभाव) किया है तो रोना धोना

करता है । झूठ को माना है, असत का भाव

किया है उसमें तेरा कसूर है, निराकार

भगवान का नहीं. तेरा ही ये अज्ञान

है जो भगवान को अलग समझता है ।

जो तू सत को नहीं जानता है तो झूठ में

पड़ा है. कितना गलत काम करता है जो

झूठ में पड़ा है । फिर बोलता है एक हो जाये.

पगला है जो बोलता है, एक हो जाये ।

आदि से भगवान से तू एक है.

एक से अनेक हो गया एक जप- एक

सलाह ।

Sameness, oneness में भगवान भक्त

नहीं है, देह में भक्त ~~बोला~~ है । देह में

भगवान बोला है

सत्ता एक है, existance एक है. हरि ॐ.
हस्ति हरि की है. वो हरि मैं हूं. I am
that Not this body. - He - she नहीं हूं
He - she गुम होना चाहिये. - जब तक
possession है तो He - she रहेगा पर. हमारी
कोई possessim नहीं तो He. she स्वच्छ हो
गया। शरीर भी मेरी possessim नहीं है।
पहले गुरु की थी, अभी मस्तों की हो
गयी -। जैसा Building वेचके कोई दूसरा
सम्भाल करता है. ऐसा तन मन धन गुरु
का है बाकी क्या बचा। - तन मन धन
पर हक किसका है. जो इसको पवित्र
रखे। तन पर हक उसका नहीं है
जो इसको अपवित्र करे

अभी बगीचे से फूल निकालो तो
सुन्दरता स्वच्छ हो जाती पसीने में टुकड़े २
हो गया - हम है तो है, द्वैत में हम गुम
हो गया, उसने मेरे को अपना समझा
मैंने उसको अपना समझा तो हमारी
Life स्वच्छ Ruin हो गयी फिर हम
मैं रहेगा - कौन सी मर्यादा करे।
कौन सी Life रहे? कैसे रहे।
तुम्हारी सत्य बुद्धि है, वो बुद्धि है, क्या करे
क्या न करे. you are कर्ता है. तो
सोचेगा पर तू Knower Seer है।
क्या सोचेगा। सोचना बंद करो। क्या
करे, जो निराकार की प्रेरणा आती
तो देखना नहीं

હુકમ રઝા ઈ ચલના --

ભગવાન के હુકમ में રહને કા હૈ.

નાનક कहता है, हुकम अंदर हरका बाहर

हुकम में सृष्टि चलती है, कैसे सुबह

होती है, कैसे श्याम होती । तुमको जब

"मैं" बकते है तो हुकम नहीं देखता है।

જો બોલતા है, आज ये किया, कल ये

કરૂંગા તો आसुरी सम्पदा का બરતા

है । - अच्छा जो किया तो Doer है तुमने

stop नहीं किया जो બોલતે है ' કરૂંગા

માના कौन करेगा ।। तुम्हारे જિબાન में

ये नहीं आता तो કલ किसने देखी

है ।.- तुम બોલો જહાં ભગવાન

को ~~કહા~~ પહુંચાના है પહુંચાયેંગે

પર અન્દર में ઇચ્છા कोई બાત હોગી अन्त

વેલા આ જાયે તો જન્મ મરણ હોગા ।

પર અન્દર में कोई Desire નહીં, અહંકાર

નહીં તો ખાલી હોગા । कोई पूछे तू

કમી આયેગા - તુમ બોલો દેખના જિસ

ટાઈમ જરૂરત હોગી તો પહુંચેગા - ऐसा तुम

નહીં બોલતે है સારા દિન ~~GOD~~ GOD will

તુમ જિબાન પર ઇતના 'ભગવાન' GOD है.

ઉસકી મરજી પર ચલોગે યા તુમ્હારી મરજી

ચલેગી :-

प्रेमी * કારણ શરીર और अन्तःકરણ में क्या

फर्क है

અ૦ - કારણ શરીર है " unconciousness

अन्तःકરણ है મન बुद्धि ચિત્ત અહંકાર

अहंकार वो जुदा है पर जो uncousnes
में अज्ञान कहां से उपजा, uncon-
में है मैं जीव हूं ये जगत है इसको
uncousness में ~~हम~~ नहीं भूलता है.
तो यहां दूसरे की बात लेके आते हैं.
जो दूसरे की बात करता है- हम
उसको पसंद नहीं करते हैं. । अभ्यास
वैराग में रहना है। अभ्यास में रहना
है मैं कौन हूं, वैराग है तो सब changeable
है, मिथ्या है, मिथ्या से प्रीत करता है तो
मिथ्या को ई सत मानता है. कौन सी
चीज है जो तू सत मानता है । हम
तुमको बोलते हैं, मेरे को वो Presen-
जो तुम न होवे. स्वांस न होवे

तुमको तीन लोक में मेरे लिये चीज नहीं
मिलेगी. क्या करें गुरुदेव को भेंट।
शरीर भी भगवान की अमानत है, ego हुआ
जो तन मन धन तू मेरे को देगा।
एक आदमी कहता है, मैं ताज महल
लिखके आपको देता हूं तो ताज
महल उसके ~~बा~~ बाप का है क्या
मां बाप क्या बना सकते हैं, एक
दांत, एक अंगुली, एक मिट्टी का कण,
एक बालू का कण बनाके आये
तुम बोलते हैं, हम मां बाप से आये
हैं, फिर कोई बोलता है मैं ~~मां~~ मां
बाप से आया हूं पर तू ये
बोलेगा निराकार भगवान था

साकार बनके आया हूं। सो दिल होवे
तो साकार होके सैर करने आया
हूं। पर यहां पर आके भी कहां
लटकना अटकना नहीं है. तू किसको मेरा
करता है तो लटक अटक जाता है.
तुम वो कर्म मेरे को बताते हैं कैसे
मेरे तुमको द्वैत आता है- जो तुम मेरा
अद्वैत ~~तुम~~ सारा दिन सुनते हैं.
पर द्वैत ही तू बताता है तुमने कभी नहीं
बोला सब भगवान का ही रूप है- मेरा
कौन है. ये ज़िबान से खाली अद्वैत
बोलो. भगवान की सब अमानत
है तुम Definatim करो तो पत्नी
से क्या मिलता है. बेटे से

क्या मिलता है'
तुम घर में जाते हो तो तुम्हारी हाँपिर
तो किसको मेरा² समझता है. Kitchen
तुम्हारा है, टिजोड़ी तुम्हारी है नहीं - एक
योगी को चोर ने कहा टिजोड़ी की
चाबी दो करोड़ो की Jewellary लेके
चले गये.
आज डाक्टर का शरीर है. तुम तो डाक्टर
उसको कोई ~~~~ कुछ भी करे उसी
सफ़ा शरीर उसका देखो। डाक्टर को
तू बोल सकता है तो नहीं कोई
तुम्हारे Cook कभी तुमको बोलेगा
Kitchen से निकल तो Kitchen
भी तुम्हारा नहीं है

तुमने अपने को फ़की करके गुलामी
किया है. कोई किसका गुलाम है.
तुम फिर माया से बोलते हैं निष्काम कर्म
होता है. ईश्वर किसको खाने पीने
की जरूरत नही है पर पार ब्रह्म की
जिस मन भूख
तुम्हारी energy माया में जर जाती
है तुम्हारा एक स्वास भी व्यर्थ
न जाये. मरकट लोभ करके शब्द
में बैठे तो मर जाती है. तू भी
माया में लोभ करता है तो मरता
जाता है
प्रेमी : पति से excpectatim होती है
भ्व. Double की बात हम नही जानते

Single की बात हम जानते है। वे अज्ञान
है तुम घर में इच्छा करता है- तू चोरी
करेगा तो फल मिलेगा माफी नही मिलेगी.
चोरी ठगी पाप कर मर- तू आया
अकेला जायेगा अकेला. उसको बिगड़
किराये क्यों लेके आया है- तू जान
तेरा कर्म जाने।

15th March 94.

Tuesday.

प्रेमी :- सात भुमिकाओं को स्वालिये

म० :- सात भुमिकाएं है नहीं -

पर पहला गुण इच्छा होती है कुछ प्राप्त

(सते को प्राप्त करूं)
करने की, कुछ सुख टूटने की कि

क्यों कि आखर दुनिया के मन कितने

लोगा तो आखर त्याग है नहीं (भगवान के सिवा)

ये ही दुनिया को हैरानी है तो सच्ची त्याग

किसमें है, कैसे है, क्यों नहीं है, पर

इन ये पता नहीं है कि हमारी अकेला

पिता परमात्मा से दूर गये हैं मेले

समझ में आ गये हैं, जब तक वो

अकेला परमात्मा पिता के हाथ में वापस नहीं

जायेगी तो हम खेल मरेगा / मरना जायेगा

कुछ भी पलय नहीं पड़ेगा, कुछ भी प्राप्त

नहीं होगा। ऐसा नहीं है तुमको कितने

भी हीरे पत्थर मिलेंगे - सारी दुनिया

भी मिलेगा पर तुम रहेगा उस जीव

जगत में। या वो आके तुम्हारी अकेला

पकड़े या तुम विचार करो तो मैं कहां

से टूटा हूँ और कहां जाके जुड़ूं

कौन मिलाये गुरु के बिना कोई राह न पाये

पर गुरु भी बहुत है, जावां २ मैं फिर --

(2) सु-विचार तब शुरू होगा जब विचार वाले

मिलेगा। अपने आप नहीं होगा Master

के सिवाय तुम एक inch भी बढ़

नहीं सकोगे। पीछे हो सकते हैं

पर आगे नहीं बढ़ते

बढ़ेगा । आगे बढ़ने के लिए Highest
Power वाला चाहिये जो power से ~~मिलाये~~
~~फिर~~ मिला देवे। तू रहे है नहीं तू रहेगा तो बहुत
अटकता रहेगा

(3) जब ज्ञान सुनते है, विचार करे
तन मन बुद्धि को और आत्मा को जब तक
अलग पहचान नही है, तो ~~[illegible]~~ तन
का आत्मा से क्या नाता है, आत्मा का
तन से क्या नाता है। केवल मैं
ज्ञानी हूँ ये जो इतना जानेगा तो
झूठ में पड़े ही रहेगा। पीछे जिस
तन से तुमको पदार्थ प्यारे लगते हैं
वो ही तन ~~झूठा~~ तुमको झूठा लगेगा
और पदार्थ भी झूठे लगेंगे

मैं ज्ञानी हूँ ये ही बड़े में बड़ा अहंकार
है, उसमें सीखना बंद हो जाता है-
किसीसे भी नही सीखेगा । आत्माकार
को अहंकार नही है मैं ज्ञानी हूँ-
कहता है ज्ञानी हूँ तो किसको कहूँ कि ज्ञानी हूँ
अल्लाह कहूं तो क्या कहूं - तो कोई - उपमा
मैं ज्ञानी हूँ अभी इधर ही खड़े हैं
तो कैसे ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ अपने को
ज्ञानी समझा ? आत्मा ज्ञानी नहीं है.
पर अपने ही स्वरूप में है. किसको कहे
कि मैं ज्ञानी हूँ- जैसा तू वैसा वो है.
ज्ञानी होके अज्ञानी देखेगा तो
उसका अहंकार रह ही जायेगा।

Mon
16.5.94

श्लोक:- गुरु अपने की मॉंगू धूड़ फिर श्रहि
मेरी श्रद्धा पूरण सदा२ गुरु के गुण गाँवा,
स्वासे गुरु तुमको ध्याया, भक्ति करूं गुरु
की नित२ गुरु के दर्शन से इसी क्षण
करोड़ पाप नष्ट हो जाते है.

सं:- कृष्ण ने भक्तों की धूड़ मस्तक मे
लगाया वो कहता है जो मेरे को पाँव
की धूल देगा तो मेरा पेट का दर्द
उतर जाएगा, क्योंकि ये क्रम है कि
गुरु बड़ा मै छोटा वो ठाकुर मै दास तो
मै कृष्ण को पाँव की धूल कैसे दूं
कृष्ण जी कहता है नहीं तू अभेद है जो
तू धूल दे मैं पीऊं तो ठीक हो जाऊंगा।
देखो जो सच्चा है वो अभेद तो है जब
तक तू अभेद नहीं होगा तो तुमको
Light नहीं आएगा, I am That, He and
She नहीं देखना, He and She मे
कभी ज्ञान नहीं होगा "That" मे ज्ञान होगा
कि वो जो है वो ही सच है. तुम पहले
अज्ञानी थे तो बोलते थे आसमान में भ० है
फिर Body को भ० बोलते थे, राम को, कृष्ण
को भ० बोलते थे, पर I am before God
was, जब तक ये नहीं जाना तब तक ज्ञान को
"ज्ञ" भी अन्दर नहीं जायेगा, तुमको हिम्मत है
बोलने की I am That इनके सिवाय Body
नहीं है, नि० भी वो ही है, साकार भी
वो ही है, सगुण भी वो ही, निर्गुण
आप सगुण भी वो ही -- --

देखो बाँसी ये करामात है खुद ही

सें. है खुद ही मगत है, खुद ही

भक्ति करता है, खुद ही सब करता

है, खुद ही ज्ञान देता है, Omnipresent

है घट² वासी है या इसमे है उसमें

नहीं ?

कल एक आदमी आया

बोला गंगा जल और नाली का

पानी एक कैसे है? गंगा का पानी

पीने के काम आता है हमने कहा

नाली का पानी खाद के काम

आता है, जेल में कैदी होते हैं

वहाँ Latrine सब गंदे होते हैं

उन से खाद बनाते है तो देखो

खाद को सब जगह जरूरत होती

है, तुम बगीचा बनाओगे तो माली

पहले खाद लेके आयेगा तो खाद

पहले है या गंगा का पानी पहले

धरती साफ बनाते हैं, खाद डालते

हैं फिर पानी काम में आता है

मैं ने बोलो अच्छा ब्रह्मकार

वृत्ति कब बनाएगा जब हम

ब्रह्म ही ब्रह्म देखेंगे स्वरूप

स्वरूप तो नाली और गंगा कब

देखेगा, एक लड़की ने हमको

कहा गंगा में कोई Brush करता

है, कोई थूकता है कोई कपड़ा

साफ करता है कोई Bathroom

करता है, ये गंगा है ईश्वर के

लोग इसे Canal कहते हैं
दरवाजा बंद करते हैं तो पानी
रुकता है, दरवाजा खोलते हैं
तो पानी अंदर आता है.

सब से बड़ी मनुष्य को
order चलता है, शेर होवे
गधा होवे, हाथी होवे, जितनी
भी चीज़ हैं तो सब उसके
order के ऊपर चलते हैं, सब
के ऊपर order किसका चलता
है? केवल आदमी अपनी
कीमत करते हैं, मुर्ख खाली
मोह काम में नीचे जाते हैं
उसको सत्यानाश है. तो क्यों

नीचे जायें, क्यों न ऊपर जायें.
गुरु भल नीचे ऊपर करे गुरु
चाहे भीख मंगाए, राज कराए
भीख मंगाए तो भी चिंता नहीं
गुरु दोनों करा सकते हैं अभी
तुम इधर झुकोगे तो दुनियां में
इज्जत करेगी कीमत करेगी या
नहीं एक वचन तुम बोलो, शब्द
तुम बोलो, तुमको बोलेंगे फिर
बोलेंगे, फिर बोलो बहुत आनंद
आता है अभी तुम कहाँ भी
जाते हैं तो, बोलेंगे बोलो
तुम इधर बात नहीं करते हैं
तो तुमको दुनिया चाहती है

यो तुम दुनिया को चाहते हो
म. ने किमत कियो तो किमत
हो गयी, म. को प्रगट कियो
तो किमत हो गयी। उनी तुम
बताओ जितने भी योगी है
मैं ने तुम्हारी किमत की है या
नहीं, इधर तो झुकना उसको
कीमत होगी, मेरे कुत्ते के आगे
भी, दुश्मन के आगे भी झुकना
है, आपस को जो जाने नीचा
सोई जानिये सब ते ऊचा
छोटे मैं छोटा अपने को जाने
सो ग्याम.

प्रे :- मैं वैसा निकलता है.
म. :- जैसो देखो वैसा है कौन सब
तो एक ही है - परमात्मा ही है.

ओम

17.5.94

प्रेमी- मेरे कुत्ते को भी झुको, दुश्मन
को भी झुको, वो कैसे?
भग- मैं कैसे भाषा बोलूं तू कौनसा
अर्थ निकालेगा सब तुम गलत हैं
तुम्हारा दिमाग में मैल में है यो
नहीं तो क्या right बोलेगा
वशिष्ट बोलता है मैं कैसी भी
भाषा बोलूं पर तुमको उससे क्या
अनुभव करना है, तुम उससे सत्
(essence) निकालो. जैसा पानी और
दूध mix हंस क्या करता है मैं
भाषा उल्टी बोलूं तुमको सुल्टी
करने की है तो भ.मैंने ये
उठाया, आप भले कुछ भी बोलो

तो हमेशा right, हम न बोले तो
अच्छा है तुम right अर्थ निकालो
हमने देखा है तो आपस में सब
संत है तो मैंने देखा है संत से
इज्जत से बात नहीं करता है, तो
मैं इनको foundation पकड़ाते हैं
तो मेरे कुत्ते को भी तुमको
इज्जत से बोलने का है. तुम ऐसा
तीखा क्यों बोलते हैं तुम पागल
खाने में जाओ. तुम इसे सत्संग के
लायक नहीं है. कोई भाई ऐसा
मगज खोर है जो बोलती है मैं
दुश्मन को कैसे प्यार करूँ, मैं पड़ोसी
को कैसे प्यार करूँ, मैं कुत्ते को कैसे

प्यार करें. मैरे को खाली एक शब्द
में बोलो तुम जो सब संत हैं, तुम
एक दूसरे से इज्जत से बात करते
हैं हमारी भाषा अच्छी होगी तो
कितना सुन्दर लगेगा गुरु का शब्द,
भाषा. हमारा दादा बोलता यो बोलो
तो सच ही बोल पर मीठा मीठा
करके बोल ये नहीं बोला सच
बोला, पर उसको ऐसा प्रिय शब्द
लगे जो बोले फिर तू बोल. हम
बचपन मैं दुकानदार के पास
जाते थे वो हमको बिठा देते थे
हम सिंध मैं Dry fruit लेते जाते
थे तो वो हमको मूल्य से Dry

fruit देते थे, फिर ऊपर से Present
देते थे तो क्यों? कि प्रेम से
बोलते थे. हम नहीं देखते हैं योगी
से प्रेम से बोलता है इज्जत करते हैं
ये योगी, संत नाम नहीं है, समझो
एक Lecture करती है दूसरी काटके
बात करती है. जब तक वो नहीं
बोले फलाणी तू इसको जवाब दे,
मैं नहीं दे पाती, तुमको काटने का
कोई हक नहीं है. जो काटता होवे
मैरे से बात करे. एक संत बोलता है
बोलने दो, वो संत बोले आप
इज्जत से बात करो, पंचायत में
बैठेगा, कैसे बैठेगा. तुम सतसंगी हैं

एक दूसरे को काटेगा, वो lecture
चले पूरा करे - तेरे को कुछ आता
है पर जब वो चुप करे तभी मैं
दो शब्द बोलूं मेरे अंदर आया है.
तुम नहीं तो कापी में लिखो पर
etiquette नहीं है वो उसको काटे
तुमको प्रेम नहीं है, ये सत्संग नहीं
है हमको दर्द होना चाहिये एक
दूसरे के लिए. तुम बड़े प्रेम से हमेशा
सुनना पर जब कोई बोले - आप दो
शब्द बोलो जोरों से, तुम कर करके
बोलते हैं ये इज्ज़त है. मैं जो
बोलते हैं इज्ज़त से बोलो - नहीं तो
emotion है तो कापी में लिखो

मैंने ये देखा है तो common sense
नहीं रखेगा तो सत्संग की सुंदरता
चले जायेगी. तुमको क्या होता है
दूसरे को cut करके अपने को
होशियार मानती है भाई. महामूर्ख है
जो अपने को होशियार माने वो
महामूर्ख है. तुम सबको सताया दिया
है तो सब मैं का रूप है. किसके
मुख से मैं बोल रहा है. इतना
तरसता है. शान्त मौन गम्भीर है
तुम बोलता है मेरे अन्दर भाव
है पर वो बन्द क्यों करें. हम सत्संग
में बैठे हैं एक बच्चे को प्रेम से
सुनेगा - सब मैं के अंदर लाल, पर

आदत होशियारी बेवकूफी तुम्हारी
निकल२ आती है. संत२ को इज्जत
न दे, कोई विकार तुमने कर दिया
- एक सुलभा थी तो उसको राजा
जनक ने नाम पूछा उसने बोला
कोई विकार तुमने कर दिया फिर
पूछेगा शादी कहां किया, फिर क्या
हुआ तो तुमने मेरे को तो नाम रूप
डाल दिया. बात भी क्यों किया.?
तुम मेरे से नाम भी न पूछो. बात
भी नहीं करो तुम्हारा मेरे से क्या
मतलब है - सुलभा बोलती है
२५ विकार कर दिया. ब्रह्मज्ञान में
etiquets नहीं है तो किसको (जो

करना, किससे राग द्वेष करना,
किससे तू मां करना, किसके आगे
होशियारी दिखानी, ये क्या बात है
तुम्हारी - तुमको दिल है अपने
station में बोलो emotion है सुनाओ
तुम रोक नहीं पाते हो.

स्थूल देह है, सूक्ष्म मन है, कारण
तेरा अज्ञान है तो जो मन है, समझो
मेरा मन देख रहा है - garden में क्या
देख रखा है समझो तुमको किसकी
आदत अच्छी नहीं लगती है तो वो
अज्ञान तेरे को पक्का होगा
हमक वहाँ ऐसा बैठे Nil जैसे थे
लोके ही नहीं है क्योंकि हमारी

वासना नहीं है, सं. नहीं है, ख्याल नहीं है द्वेत द्वैष नहीं है बैठे रहे वो अपने नशे में हम अपने नशे में हम count नहीं करते हैं, कोई हसे कोई बोले, कोई गाये, कोई नाचे हम तमाशा देखते हैं जैसा Picture चलती है

ये तो हाल सबका है — तुम बच्चे से ऐसा बात करेगा चुप कर पर जैसे हमने पैदा किया है अब order करेगी तो मैंने सबको बोला ईश्वर क्यों नहीं ज़िबान खुलती है, हम हर जगह जाते हैं ये, मुस्कराके

लीला देखते थे आज की लीला ये है तुम बोलो न बोलो, देखो न देखो, सब enjoy के लिये आया है तू क्या विक्षेप करेगा तू आके बकेगा कितनी हंसी की बात है तो वह बच्चे को इतना order करेगा सब मेरी जान है सब मेरा रूप है, हम order करें भूत को करें, पंखा साफ कर सं. उठो तो जो सं. उठो तो तू कर तू मर तू रुक. एक माई बोलती है 5 नौकर हैं हम सब करने लगे नौकर हाथ जोड़ा तो आप कैसे करते हो. हमने सारी प्रकृति बनाके दिया. उसको खुद शर्म आया नौकर को

हम न करें. तो कैसा सुधर जाते हैं
(मैथेरान में नौकरानी चुप करके
बैठ तू महमान है. काहे को काम
करती है. एक शब्द इधर से नहीं
निकलता है. देखो नौकर देखना
बात करना, ये.

12.9.94 ॐ

तुम लोग किसी भी ~~जीव~~ गुरु के पास जायेंगे तो तुमको बोलेंगे ही जीव तू नाम का स्मरन कर भ. को याद कर. दादा भं बोलते हैं तू है ही नहीं ईश्वर भ. है. ज्ञान की महिमा है ब्रह्म है पर तू नहीं है. तेरा नहीं है सब कुछ मैं ही तो हूं. सब भ.. का shadow already हुआ है. बढ़ गया है. तुम जो मैं 2 बोलते हैं उसको हम क्या करें. तुम मेरे को भी भं. बोलते हैं पर artificially क्यों कि तुम पहले अपने को जानो मैं कौन हूं? नहीं तो artificial भं.. बोलते हैं. Real भं. कभी बोलेंगे जभी अपने को जानेंगे.

तुम मेरे से मेरे जैसा होवे पर तुम watch करो जीव से आराधना साधना करते हैं. हमारे को देखके सब हैरान होते हैं कि ये साधना आराधना नहीं करते हैं ये कैसे भ. है? तुम्हारे से लोग पूछेंगे कि तुम्हारे गुरु साधना नहीं करते हैं? तुम मेरे को बताओ जब है ही भ. तो किसकी आराधना करें?

भं. तुम जिसको भ.. बोलते हैं वो तो है न already है. कौनसी साधना करें जो दिखने में आये, कि इसने ये साधना किया तो ये फल मिला. तुम कौनसी साधना करते हैं, एक है सिद्ध, एक है साधक, हम सिद्ध हैं.

तुम बताओ तुम कौन सी साधना करोगे.

प्रे. अनन्य भक्ति, आपके मन वचनों

को पालन करना

मं. एक दफा माँ ने तुम्हारा नाम रखा है

वो तुमको भूला है. अचानक भी कोई दूसरे

को तुम्हारे नाम से बात करेगा बोलेगा

मेरी बात हो रही थी.

और तुम जवाब दे देंगे ये तुमको याद

है. तू already कौन है, जो देह में आके

जीव बने हैं. जीव है तो जगत है, आत्मा

है तो परमात्मा है. ज्योत हमारी आत्मा

परमेश्वर परिवार तुमको आनंद में तभी

आएगा जभी तुम अपनी खोज में रहेगा.

निजी रूप को नहीं जानेंगे तो बाहर के

दर्शन से तृप्त होंगे या मं. को हृदय

में बिठाके तृप्त होंगे? मं. माना घट वासी

तुम मं. कैसे बोलते हैं, मेरे को घट वासी

नहीं जाना तो किसी को नहीं जाना, जो वो

देखेगा इधर क्या है उधर क्या है. एक जगह

मं. है दूसरी जगह नहीं है क्या? तुम हमेशा देह

से बात करते हैं मैं आते हैं जाते हैं. मैं के

सिवाय तुम्हारी बात ही नहीं है. पर जो मैं

करते हैं उसका कोई प्रायश्चित ही नहीं है

मं. को बंद करके अपना शरीर दिखाते हैं

तो उसको माफी कैसे मिलेगी. तुम बोलो

अपना पाप कैसे बख्शाएगा तुम. जो already

मं. को भुलाके अपना देह अध्यास में बैठे हैं.

तो सं. कि चलेगा. जैसे कोई किसी का खून

करके छिपा रहे तो कितना पाप है तुम भी

श्री० को छिपाकर पाप करते हैं, आत्माकार सब कुछ करते हुए कुछ नहीं करते हैं. तुम्हारे से भी अच्छा खाते हैं तुमको sense भूला पड़ा है, देह नहीं भूली है. एक मिनट भी तुम्हारे घर में कोई भी आएगा, नौकर आएगा, बेटा, बेटी आएगा, तुम खुश होंगे, जैसे तुम इनके इन्तजार में बैठे थे इसमें तुमको तृप्ति आती है जब तुम देह-अध्यास में बैठते हैं. हम आत्मा में तृप्त रहते हैं.

प्रेमी:- अपने को श्री० मानना अहंकार नहीं है.

श्री०: तुमने देह को किधर भुलाया नहीं. हमने तुम्हारे से इतनी बात किया कि पहले अपनी देह को मिटाओ पीछे आत्मा

है तू - चोले को श्री० कैसे बोलेंगे? पहले आत्मा है फिर चोला है. ये तो तकिया फिर cover है. Pillow है तो cover है ना अजीब बात है तुम मेरे को तो श्री० बोलेंगे तुमको थूक मारके भी श्री० नहीं बोलेंगे

प्रेमी- सर्व में श्री० देखना है

श्री०:- मैं तो सब को

मैं नहीं बोलेंगे श्री० तो उसके मुख से श्री० निकल आता है. अजीब बात है. तुमे नहीं बोला कि मैं श्री० हूँ दूसरा तुमको बोले कि तू श्री० है. जैसे अर्जुन ने उसको श्री० कहा तो चारों तरफ से नमस्कार किया और कहा कि मेरी तुमको चारों तरफ से नमस्कार है श्री० तू नि. है तू सत् है

पहले तुमको दोस्त समझा वचन बोलने
मैं भी बेअदब किया मेरे को माफ करो
पहले मैंने जान नहीं लिया. तुम सब
को कौन जानता है कि तुमको दृष्टि-
अध्यास नहीं है. तुमको सब भासता
है. दुःख-सुख, मान-अपमान चमड़े
की गाली से परस नहीं और है
प्रेमी:- म. आज
सुबह को
क:- बात सुनो सवेरे ही जाग होवे तो
बिस्तरा फेंक दियो चाहे उठकर
बर्तन मांजो, कामवाली को निकाल दो
और फिर सिर पकड़ कर बैठेगा. और
फिर कौन बोलेगा नींद नहीं आती है,
चार बजे उठो, पांच बजे उठो

और दिमाग को ~~चल~~ चलाऊं नहीं
दुलाऊं नहीं और शान्त रखो. जाग
जाओ और उठ ~~जाओ~~ जाओ

सतगुरु के मुख का महावाक्य है "

ओहम सतगुरु प्रसाद" मैं वो हूं ये

देह धारण की है. देह एक चोला है,

फटने वाला, गलने वाला, जलने वाला पर

आत्मा 'ओहम' अजर अमर है शाश्वत

है (न नाश होने वाली है)

ओहम - सोहम - शिवोहम । ओहम means

I am that not He or She, सोहम -

जो तू है सो मैं हूं फिर शिवोहम - सारे

जगत की प्रलय करके जानता है कि

मैं वो हूं शिवोहम सारे जगत की प्रलय

करो. तभी जाना साईं ही सब में है,

सब में साईं ही ~~देखना~~ देखा. Meaning

मैं न जाके जो एक देखे वो म. देखता

"सब ना जीवां का इको दाता, सो मैं

विसर न जाई"

सब लीला दृश्य मात्र है, खेल मात्र है

सबकी शिवोहम करके अपने निज

स्वरूप में लीन रहना है. साक्षी दृष्टा.

प्राण बने हैं वो ओम से ही बने हैं.

आप शान्त करके देखेंगे तो प्राण ऊपर

चलते हैं तो 'ओ' नीचे आते हैं. तो 'म'

शब्दों में नहीं बोलना है पर म. ने

प्राण बनाये ही ऐसे हैं जो ओम चलता

ही है. "ओ" माना म. को अंदर लाओ.

'म' माना माया, माया को बाहर

फेंको. जो माया में है उसके प्राण

नीचे गिरते हैं स्थूलता में मोटी

बुद्धि. जब तक सोना चाँदी सत् है तो
सूक्ष्म वृति नहीं होगी. भले माया में
बैठे भी रहें पर मिथ्या लगे, सत
समझके नहीं बोलना चाहिये पर
मिथ्या समझके रहना है.
ओम का अभ्यास है ऐसी stillness
हो जाये जो उसको लगे प्राण चलते
ही नहीं हैं, प्राण उठते ही नहीं हैं.
प्राणों में वासना है तो प्राणों को भी
तकलीफ है 'संत विलास' किताब
में लिखा है कि जो लगातार 8 दिन
अभ्यास करे ओम का, जहा एक भी
ख्याल न करें और ओम में रहें,
एक भी नाम-रूप ना रहे. नाम-रूप

आर second में फेंक दो कि मेरा की?
ओम में लीन. इतना अभ्यास करें जो
भीतर नाम-रूप की परछाई भी न आए.
आगे किधर भी जाते थे तो लगता था
प्राण जैसे हवा उठा रहे हैं पर अभी
लगता है वो भी जरूरत नहीं है. अभी
लगता है ये शरीर प्राणों से नहीं पर
भक्तों की भावना से चलता है. भीतर
में ऐसी stillness होवे जो कोई भी
सेवा होवे तो लगे हाथों ने उठाके
रख दिया, हाथों ने किया. अंदर में
महाशांति stillness जैसे कुछ किया
ही नहीं. दिल की धड़कन उसको
होती है जिसके अंदर जरा भी द्वैत है.

किसी से मिले भी नहीं और कोई ये ऐसा
है तो भी धड़कन है. इतनी stillness
होवे जो इशारे में जवाब, सदा साधना
में रहें —

ओम में हो जाऊँ, ये नहीं पर ओम
में टिक जाए. एक बार ऐसा पुरुषार्थ
करें जो नीचे न आएं. ओम में रहो
तो परमात्मा का दर्शन हो जाए. whole
world is filled with God.
(The whole world is one purified
body of lord) सारी सृष्टि भ. से
भरी हुई है. सारी सृष्टि ओम का
ही पसारा है. उसके सिवाय कुछ
नहीं है. तत्व है, essence है,

और सत् है. बाकी सब changeable है.
गीता में बोलता है हृदय में ओम का
निवास है. सब द्वार बंद करके उसका
अनुभव करें और प्राणों को मस्तक
में रखें. means अंतरमुख वृति रखें.
Gods, भ० की, आ० कई तरह से
सुनी जा सकती है. जमीन और
समुंद्र में है ओम का साज, वृक्षों से
भी वायु ओम बोलती है, पंछी की
उड़ान में है ओम बादल की गड़गड़ाहट
में है ओम, झरनों के जोश में है ओम
Plane के start में है ओम,
मनुष्यों और पक्षियों की बोली भी
है ओम. अंदर बाहर है ओम ही ओम

Present of God, present of om

should be in everything.

see God in everything sameness

and oneness of God

गंगा माता के जल में है ओम

प्रभु प्यारे की ऐसी मैं

भी जो तत्व को पकड़ने में लगा

जाये, इतना उसमें गुम हो गये जो

बीच में पैसा, बेटा, लोग, संसार

सोचने, घर सोचने का Time ही

नहीं था. हरि ओम

लगातार बस में चढ़ने के ~~समय~~

समय से end तक (उतरने तक)

पहुँचते तो भी सोचने को जरा

भी Time न मिले. मेरी ~~क~~ लगन खत्म

न हो ~~हो~~ जाये लगातार लगी जाये

लगा लगा की तरह लगी जाये.

लगातार ध्याने उसमें गुम हो जाये.

वासना ~~में~~ गुम हो जाए - संस्कार गुम

हो जाये कभी ख्याल लेने ~~की~~ की

नहीं किया

जितना कोई खाली होगा, उतना ओम

में ऊँचा चढ़ेगा. जो ओम में होगा वो

कहाँ भी

1. मेरी अमर ज्योति को नमस्कार
2. मेरी निराकार को नमस्कार
3. आदि सत् को नमस्कार
4. जुगाद सत् को नमस्कार
5. परम रूप को नमस्कार
6. पतित पावन को नमस्कार
7. हिरण्यगर्भ को नमस्कार
8. सत चित आनंद को नमस्कार
9. करुणामय को नमस्कार
10. शांति धाम को नमस्कार
11. ज्ञान रूप को नमस्कार
12. अमृत रूप को नमस्कार
13. परमधाम को नमस्कार
14. केवल तत्व को नमस्कार
15. कैवल्य रूप को नमस्कार
16. ज्योतिर्मय को नमस्कार
17. पाप नाशि को नमस्कार
18. गुरु रूप को नमस्कार
19. चैतन्य मूर्ति को नमस्कार
20. स्वयं को नमस्कार
21. सर्वरूप को नमस्कार
22. शिवरूप को नमस्कार
23. बिज तत्व को नमस्कार
24. अद्वैत मूर्ति को नमस्कार
25. लीला धारी को नमस्कार
26. त्याग मूर्ति को नमस्कार
27. प्रभा[illegible] स्वरूप को
28. रसायक को नमस्कार
29. देव देव को नमस्कार
30. राम रामेश्वर को नमस्कार
31. काल काल को नमस्कार
32. मधुरवाणी को नमस्कार
33. अनंत भुजा को "
34. सांग मूर्ति को "
35. निर्मल रूप को "
36. गंगा पद को "
37. स्वर्ण रूप को "
38. कुटरूप को नमस्कार
39. निर्भय स्वरूप को नमस्कार
40. निष्पाप निष्कलंक को नमस्कार
41. कोमल चरण को नमस्कार
42. परमेश्वर को नमस्कार
43. विश्व नाथ को नमस्कार
44. सर्व रक्षक को नमस्कार
45. करुणा रूप को नमस्कार

(46) ~~अंश~~ ॐ ~~स्वरूप~~ नादे को नमस्

(47) समदृष्टि को नमस्कार

(48) महा योगी को नमस्कार

(49) निर्मोही को नमस्कार

(50) निर्लेप को नमस्कार

(51) निर्द्वन्द को नमस्कार

(56) निरामय को नमस्कार

(57) निश्चल रूप को नमस्कार

(58) निरहंकार को नमस्कार

(57) महामौनि को नमस्कार

(58) कर्मातीत को नमस्कार

(59) मायातीत को नमस्कार

(60) अचिन्तनीय को नमस्कार

(61) बोध स्वरूप को नमस्

(62) नित्य सत्य को नमस्कार

(63) चक्रधारी को नमस्कार

(64) विश्व रूप को नमस्कार

(65) स्व साक्षी को नमस्कार

(69) जागृती रूप को नमस्कार

(70) सर्व भौमि को नमस्कार

(71) महा अग्नि को नमस्कार

(71) चिद आकाशी को नमस्कार

(72) सुन्दर मूर्ति को नमस्कार

(73) परमपावन को नमस्कार

(74) पवन देव को नमस्कार

(75) विदेही को नमस्कार

(76) महावैरागी को नमस्कार

अचल को नमस्कार

स्थिति प्रज्ञ को नमस्कार

त्रिगुणातीत को नमस्कार

महा अनुभवी को नमस्कार

अनन्त को नमस्कार

अनादि को नमस्कार

परम प्रकाश को नमस्कार

चिद् रूप को नमस्कार

अविनाशी को नमस्कार

ब्रह्म वेत्ता को नमस्कार

निरंजन को नमस्कार

प्राणतत्व को नमस्कार

अक्षर ब्रह्म को नमस्कार

प्रेम समुद्र को नमस्कार

अक्षय आनंद को नमस्कार

यज्ञ रूप को नमस्कार

आदि गुरु को नमस्कार

अवतार रूप को नमस्कार

दादा लक्ष्मी भगवान को नमस्कार

13.12.82   D.B.

मूल से हम गुरु को छोड़ देते हैं गुरु
के पास जाना चाहें तो अपनी बात
नहीं चलाना चाहिए उसकी बात जो
भी गुरु से निकले कदम श्रद्धा से
मानना चाहिए - तुम फिर बोलता है ये

बात ऐसा नहीं वैसा, पर हम गुरु की बात
तथास्तु नहीं करता है. पर अपना सम्बंधी
समझता है. बाप की तरह, नौकर की तरह
समझता है. उसको कर्ता मानते हैं तो गुरु
ऐसा करता है. वैसा करता है, पर वो कुछ
करता नहीं है. एक बात करता है, दूसरा नहीं
वो तुम नहीं जान सकता है गुरु की बातें
गुरु ही जानता है set a

ऐसा गुरु होता है बात निकली समझता है.
तो गुरु से कैसा बात करना चाहिए.

अद्वैत means Non-duality हम सब
अपने को देखता है हम जैसा अपने को
समझायें मैं ही तो हूं सब को इतना प्यार
करेगा सब हमको प्यार करेगा. हम तुमको
सुबह² राम² करता है तुम बोलता है

राम ही राम Only GOD exist हम कि
आदमी को प्यार देता है तो 10 आदमी
प्यार करता है. हम जिसको प्यार करें तो
हमको करें तो स्वाभी बात है पर प्यार बेहद
का है, निष्काम का अर्थ है तो मेरे को
अपने फायदे का कुछ इच्छा नहीं है, मेरे
को कुछ फल चाहिए. कृष्ण भ. 2 अध्याय
में निष्काम की बात करता है.

26.12.82
morn. चोर चण्डाल देखने को हमारा क्या
मतलब है? तुम बेवकूफी से Judgement
करता है कि ये अच्छा है ये बुरा है पर
तुम ownself को तो जाने पीछे मले सब को
जज करना. फिर जज करना भी नहीं पड़ेगा
वो आप ही तेरी शरन लगा. बोलेगा ये ही
सच्चा है जिसने भ. की शरन लिया है.

- किसी को wrong - right बोलने का
तुम्हारा मतलब नहीं है, जब जज को
2 हजार मिलेगा तब वो बोलेगा कि तू
wrong है right है. तू जान बूझकर
किसको Judgement करता है उससे
पण तुम्हारा नुकसान होता है. जज को
फायदा होता है जो उसको fee मिलती
है और तुम्हारा काम बनता है. तू काहे
को दूसरे को जज करता है जो करेगा

सो मरेगा.

— एक भी दुश्मन हम क्यों रखें? क्यों न उस को पांव पड़ें? रोज उसको झुकें उसका झुकना क्यों न आता है. रोज tension (टेन्शन) लेके बैठा है कि ये मेरा दुश्मन है. झुकने में मरने में हमारा क्या जाता है.

1.1.83 New Year — मेरे को पत्थर के शिला पर सोना चाहिए तब मैं आ० हूं.

ॐ की महिमा क्यों बोलते हैं जहां visible चीज़ नहीं रहे, इसलिए ॐ की महिमा है. तुम तो एक मूर्ति में मन रखेगा, पर बाकी में नहीं, पर बाकी भी आ० है.

— I am That Not This तू वो नहीं जानेगा पर he she देखेगा. एक चीज़ है जानने की कि देखने की कोई भी चीज़ रहे. जलेगी मरी मरेगी कोई हमेशा रहने वाली नहीं है. तू शरीर में रहके आ० को नहीं मानेगा तेरा एक विकार नहीं जायेगा अगर शरीर में रहेगा. all Power आ० है तो मुझे मैं बोलता है मैं क्रोध करता हूं. एक कौ को सुख नहीं मिलेगा चाहे तू करोड़ रुपया दान करे. हमारे पास Cockroach

बिल्ली बनके आते हैं क्योंकि उसने अपना घर में वासना रखी तो मैं वो ही घर में आऊँ, तू मैं करके वासना रखता है पर सब में ही खुद है. तू बोलता है मैं झुकेगा तो वो ऊपर चढ़ जायेगा. ऊपर चढ़े न? उसको नि- आपे ही नीचे लायेगा. प्यार करने में तुम्हारा क्या नुकसान जाता है. तुम मन को प्यार करता है पर दूसरे को प्यार नहीं करता है. जो अपने मन को प्यार करता है वो दूसरे को धिक्कारता है.

गरीबी में बहुत आनंद है, शाहूकारी को तो मैं निंदता हूं.
औरतें नौकरी करती हैं पर अपना जीवन खराब करती हैं. अपने घर में नमक रोटी खाओ पर शांति हासिल करो. ज्ञान किसको नहीं है सब मेरे शब्द पर खुश है.

गीता में बोलता है कर्म करना फल की इच्छा नहीं रखना पर मैं Doer क्यों बनूं ये Danger काम है जो करके फिर बोले इच्छा न रखे. जैसा कापूर जल जाता है. राख नहीं बचती है ऐसा तेरी राख नहीं बचे. ज्ञान यज्ञ सबसे श्रेष्ठ है सब यज्ञ योगी करते हैं पर बोलता है मेरा पता है ज्ञान यज्ञ सब से श्रेष्ठ है. हरेक चीज़ को अलग फल है पर निष्काम

1
मेरा स्वभाव है पर कर्म नहीं है मनुष्य को
स्वमान होवे जो खुद को मारके सबकी
भलाई होती है पर तुमको मालुम न पड़े
तो मेरे से कुछ हुआ जैसा सूरज को कोई
बोले अंधेरा नास किया तो वो बोलेगा मेरे
को क्या मालुम - तू Mr. Mrs. मानता है पर
एक ही ~~म.~~ तेरा रूप मैंने धारन किया.
सब को मौत है तब म. है. आदम खुदा
नहीं पर खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं
तू किसको लिए बोलेगा ये अच्छा आदमी है
हमको गुस्सा आयेगा क्योंकि दूसरे को फिर
तुम ज़रूर बुरा बोलेगा. हमारे लिए दृश्य
नहीं है. शरीर सब का विकारी है-
विकारी changeable को बोलते हैं आत्मा
खाली निर्विकारी है जो आत्मा में है तो
सदाई प्रसन्न चित रहता है उसको
मान अपमान एक ही ~~समझता~~ है. उसने
हालत को जवाब दे दिया तो मान अपमान
कहां से आया.

तू दुकान पर जा रहा है. कोई ज़रूरत
वाला आयेगा तो तू नहीं ~~अ~~ उसको
ध्यान देगा. पर उसको प्रान निकालेगा
तो तू नहीं देखेगा तू सदाई तीन गुण में
है. तो कभी कैसा, तू दुखी है
क्योंकि अहंकारी है. तू कभी बहुत
अच्छा दिखाएगा बहुत प्यार से बात
करेगा फिर कभी ऐसा गुस्से में

2
कभी कैसा तो तुम जुदा Pose बनाता है
विधवा दिखाती है मैं दुखी हूं एक महिने
के बाद Picture पर होगी सबको अपने
से प्यार है दूसरे से नहीं. सब एक
दूसरे में मायावी नज़र रखके बैठा है.
सब तुम्हारे पैसे को इज्ज़त करते हैं. तुमने
हमारा म. की इज्ज़त गंवाई है. कई Pose
भाई का, सेठ का बनाते हैं हमारे पास
कई लोग आते हैं हर एक अपनी seat
लेता है हमने invite नहीं किया तुम तो
किसको Dry fruit खिलाएगा, किसको
बिठाएगा किसको क्या करेगा तो साहूकार
के पास गरीब जाएगा तो वो समझेगा
ये पैसा मांगने आया है पर ऐसा नहीं
समझता है तो प्रेम के लिए कोई आ सकता
है. तुम्हारी माया से तू तृप्त नहीं है क्यों
कि तू निष्काम नहीं है पर जो खुद निईच्छा
होगा वो निईच्छा बनाएगा इधर मनुष्य
जन्म उतम में उतम मिला उसमें तुमने
क्या किया. खाके भोजन पैदा करके बच्चे
सब जानते. तुमको म. realise कराएगा
तो तन मन धन तुम्हारा नहीं है. तू तुम
messenger Passenger है. तू अपने को मालिक
समझता है तू चमार आत्मघाती है
कितना समय म. मेरा किया ओम को
आत्मा को भूला, दे. अ. धरती पर बोझ है.
वो कृतघ्न है क्योंकि देता है म. है बोलता है

ते मेरे को बोलते हैं तुमने
स्नान किया पर मेरी टंकी की कुर्बानी
नहीं है क्योंकि तुमने गाड़ी रखी तुमने
पाया पर इसने कुछ नहीं किया पानी
का स्वभाव है. ऐसे रहना तो इसमें क्यों है

[illegible]

[illegible] involve [illegible]

[illegible] Place [illegible]

[illegible] body [illegible]

[illegible] shadow [illegible]

[illegible] shadow

[illegible]

नमसत्वं अकाले
नमसत्वं क्रिपाले
नमसत्वं अरूपे
नमसतं अबाहे (अविनाशी)
नमसतं अढाहे (न गिराये जाने वाले को)
नमसतं अनीले (रंग रहित को)
नमसतं अनादे (आदि रहित को)
नमसतं अछेदे (न काटे जाने वाला)
नमसतं अगाधे
नमसतं अगंजे (रोग रहित)
नमसतं अभंजे (न टूटने वाले को)
नमसतं उदारे (सत्वा रूप)
नमसतं अपारे
नमसतं सु एकै (उस एक रूप को)
नमसतं अनेकै (अनेक रूप को)
नमसतं अभूते (पांच तत्व रहित)
नमसतं अजूपे (बंधन रहित)
नमसतं निकरमे (कर्म रहित को)
नमसतं निभरमे